॥ श्री हिंडन व्यथा कथा ॥

तरुण जल विद्यापीठ

॥ श्री हिंडन व्यथा कथा ॥

प्रेरणा

श्री राजेन्द्र सिंह

सम्पादन

अरुण तिवारी

प्रकाशक

तरुण जल विद्यापीठ, अलवर, राजस्थान

वितरक

राष्ट्रीय जल बिरादरी

34/46, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान

फोनः 0141-2393178

स्थानीय संपर्क

हिंडन जल बिरादरी, बाल्मीकि आश्रम, बालैनी, बागपत (उ.प्र.)

फोन : 0122-2238277, (मो.) 09897554857

लेख

डॉ. बी.बी. सिंह, रमेश शर्मा, कृष्णपाल सिंह, कुलदीप सिंह, संजीव ढाका, देवेन्द्र भगत, सुशील यादव, योगेन्द्र वैदिक, आर्यवीर, मा. जयपाल यादव, मा. ईश्वरदत्त कौशिक, डॉ. एस.डी. शर्मा

“

कहानी तब की है, जब स्वर्ग धरती से मिलने आया करता था और धरती की संतानें परम पिता से मिलने सशरीर स्वर्ग जाया करती थीं। जो क्षेत्र तब स्वर्ग और धरती का संधि क्षेत्र थे, वे ही अब उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश के संधि जनपद हैं : हरिद्वार और सहारनपुर - एक शैव क्षेत्र का प्रवेश द्वार है, तो दूसरा शिव नन्दी का सिंहासन। शिव नन्दी के प्रवाह को किसी ने हरनेन्द्री कहा, तो किसी ने हरनन्दी। हरनन्दी का अमृत प्रवाह जहाँ-जहाँ पहुँचा, वहाँ-वहाँ धरती सरसब्ज बनी, संतानें सुखी हुईं ... संस्कार प्रबल हुए; हरनन्दी यात्रा मार्ग पंचतीर्थी हुआ और हरनन्दी लोगों का मन प्राण। इसी बीच भारत में नई पढ़ाई ने दस्तक दी। भारत ... 'इंडिया' हो गया और हरनन्दी... 'हिंडन'। पहले नाम बदला... फिर सूरत। कुछ स्वार्थी विषधरों ने हरनन्दी बना को घेर लिया। श्रद्धा के पुष्प उलट गए। शिव के पुजारी शव की खातिर लड़ने लगे। नदी किनारे की आत्माएं मर चुकीं, पर उनके शरीर आज भी मल-मूत्र-कूड़ा-करकट, ...गन्दगी से नदी को स्नान कराते हैं और फिर गाते हैं – जय ! जय! हिंडन !! अफसोस! हिंडन की सिसकन किसी को सुनाई नहीं देती।

क्या आपको भी ?

”

आह्वान

दूसरे के दुःख से दुःखी होना, कलिकाल का चरित्र नहीं, किन्तु मेरठ के गांव मोहम्मदपुर धूमी का तो जैसे चरित्र ही यही है। हिंडन के दर्द की चर्चा जब धूमी पहुँची, तो जयपाल बेचैन हो उठा। उसकी सारी रात आँखों में कटी और सुबह होते ही उसने सूरज की रोशनी कागद पर उतार दी। उसने लिखा –

''बचपन में हम भी नहाते थे, मेलों में साधु आते थे।
इसका जल लेकर जाते थे, कीचड़ कोई क्यों ले जाये।''
''भविष्य में जहर इस जल में होगा, फिर हर घर के नल में होगा।
छेद नदी के तल में होगा, तब हम सब कैसे बच पायेंगे?''
जयपाल सिर्फ व्यथित हो इतना नहीं, वह हिंडन को दर्द से मुक्ति को भी प्रतिबद्ध दिखता है।
''पहले तो पदयात्रा कर लो, अमन शांति के पग धर लो?
भोले भाव से आह्वान कर लो, शायद शासन शरमा जाए।
वरना तो फिर बात करेंगे, इनसे दो-दो हाथ करेंगे।''
क्या ऐसे चित्र, ऐसी छटपटाहट, संकल्प आपके मन-मस्तिष्क में भी उभरते हैं?..... पता नहीं, किन्तु हिंडन और इसमें मिलने वाली धाराओं की कोख में जन्मे शहरों के स्थानीय निकायों और उद्योगों के

व्यवहार को देखकर लगता है कि इनके लिए 'हिंडन मात्र एक कूड़ादान है... और कुछ नहीं; न माँ... न पिता... न कुछ और। माना कि उद्योगपति आँखों पर लालच का पर्दा पड़ा है और हमारे नगर निगम... नगर पालिकाएं तथा प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड अपने निकम्मेपन से लाचार हैं; लेकिन क्या हम ग्रामवासी... खेतिहर भी कुछ ऐसा ही बहाना बना कर अपनी जिम्मेदारी से बच सकते हैं?

हिंडन हमारी प्राण रेखा है... हमारा जीवन दर्शन; हम अपनी आँखों पर पट्टी नहीं बांध सकते। हमें अपनी आँखें खुली रखनी होंगी... न सिर्फ बाहरी आँखें, बल्कि ज्ञान चक्षु भी। पहले हमें खुद अपना आकलन करना होगा। ज्यादा पीछे लौटने की जरूरत नहीं; अपने गाँव के किसी भी बुजुर्ग से पूछें। वे बतायेंगे कि पहले कैसे हम आसमान से बरसी हर बूंद को अपने तालाबों-बावड़ियों में सहेजकर धरती का पेट भरते थे। तालाबों, बावड़ियों और कुओं का निर्माण करना पुण्य का काम माना जाता था। इनका निर्माण ठेके अथवा मजदूरी अदा करके नहीं, बल्कि साझे से होता था। जब तक हम प्रकृति से लेने और देने ... दोनों का रिश्ता निभाते रहे, हिंडन का सीना गर्व से उन्नत बना रहा। लेकिन अब?

अब क्या?... अब न तो मेरठ के बहरामपुर में कोई मंगल पांडे बगावत करता है; न कोई चौरासी खांप, न कोई शाहमल हुकूमत को भयाक्रांत करने की कुव्वत रखता है; और तो और अब कोई लव-कुश भी पैदा नहीं होता। टिकैत की लाठी से दिल्ली का मंच चरमरा जाये- यह बात भी अब पुरानी हो चुकी। अब तो हम ग्रामवासी... खेतिहर किसान भी हिंडन की ऐसी संतानें बन गए हैं, जो हिंडन को माँ या पिता तो कहते हैं, लेकिन पुत्रवत् व्यवहार कभी नहीं करते। हमने हिंडन को उम्र से पहले ही बूढ़ा और लाचार बना घर की चौखट से बाहर बिठा दिया है। सिर्फ इतना नहीं... बल्कि अधिक पानी वाली फसलों और अधिक

उपज के लालच में उर्वरक और कीटनाशकों का अंधाधुंध उपयोग कर हमने हिंडन का कष्ट बढ़ा दिया है। हिंडन को तो हमने नीमबेहोशी में पहुंचा ही दिया, अब हम भी मरेंगे ... कोई डूब से, तो कोई सूखे से और कोई कैंसर, पीलिया और आंत्रशोथ से। प्राकृतिक मौत तब शायद ही किसी को नसीब हो।

अब कोई चारा नहीं, सिवाय नदी को पुनर्जीवित करने के। संकल्प पक्का है। कुछ तो करना ही होगा। क्या करें? कैसे करें? ... इसके लिए जरूरी है कि पहले हम जानें हिंडन की देह को आत्मा को .... और यह भी कि कैसे हुआ हिंडन का सत्यानाश?

आपका

राजेन्द्र सिंह

(अध्यक्ष, राष्ट्रीय जल बिरादरी)

राजस्थान के हजारों गाँवों में पहले जल और फिर विकास का नया ककहरा गढ़ने के लिए एशिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सम्मान-मैगासायसाय अवार्ड 2001 से सम्मानित।

हिंडन को निर्मल रहने दो।
हिंडन को अविरल बहने दो॥

अनुक्रमणिका

1.	हिंडन की देह	डॉ. बी.बी. सिंह	7
2.	हिंडन की आत्मा	कृष्णपाल सिंह	13
3.	हिंडन का सत्यानाश	अरुण तिवारी	15
4.	हिंडन की प्रदूषण मुक्ति	कुलदीप सिंह	22
5.	हिंडन के स्वर	सुशील त्यागी, योगेन्द्र वैदिक, आर्यवीर, मा. जयपाल यादव	30
6.	हिंडन के अनुभव	रमेश शर्मा	35
7.	हिंडन के संकल्प	संजीव ढाका	44
8.	हिंडन की संसद	देवेन्द्र भगत	47
9.	हिंडन की पाठशालाएँ	ईश्वरदत्त कौशिक	49
10.	हिंडन का इलाज	डॉ. सत्यदेव शर्मा	53

1. हिंडन की देह

डॉ. बी.बी. सिंह

(पूर्व प्राचार्य, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद, उ.प्र.)

किसी जल प्रवाह के भूगोल को जानना, उसकी देह को जानने जैसा ही है। यदि नदी के उद्गम स्थल को हिंडन का चरण मानें तो हिंडन का उद्गम स्थल गंगा-यमुना के दोआब में स्थित है। हिंडन इस दोआब के बीच उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है। जल की दो धाराओं के बीच का इलाका 'दोआब' कहलाता है। 'आब' यानी पानी। इसी से मुहावरा गढ़ा गया - पानी उतारना यानी बेआबरू करना। हिंडन को पर्वतपदीय धारा कहा जाता है। हिंडन और उत्तर के उच्च मैदानी इलाके से शुरू होकर नीचे दक्षिण दिशा में आकर हिंडन से मेल करने वाली सहेलियाँ... हिंडन जल प्रवाह तंत्र की निम्न रूपरेखा तैयार करती हैं :

नदी	लम्बाई
हिंडन	260 किलोमीटर
कृष्णी	78 किलोमीटर
काली	75 किलोमीटर
नागदेवी	41 किलोमीटर
धमोला	52 किलोमीटर
पांवधोई	20 किलोमीटर
सम्बन्धित प्रमुख नाले	80 किलोमीटर
कुल	606 किलोमीटर

उल्लेखनीय है कि हिंडन नदी का जल प्रवाह एक विस्तृत खादर क्षेत्र है। यह क्षेत्र लगभग 5,000 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ है।

उद्‌गम से संगम तक

हिण्डन नदी उत्तर में कालीवाला पहाड़ियों के निचले उच्च मैदानी भू-भाग में 350 मीटर ऊँचाई से प्रारम्भ होती है। सहारनपुर जनपद के उत्तरी-पूर्वी उच्च मैदानी इलाके में स्थित ''पुर का टांडा'' गांव के निकट इस नदी का उद्‌गम स्थान है। इस भाग के प्रमुख गाँव-इस्लाम नगर तथा औरंगाबाद क्रमशः 326 मी. तथा 330 मी. ऊँचाई पर स्थित हैं। हिंडन नदी के उद्‌गम भू-भाग में कटाव भरे अनेक जल स्रोत ऐसे हैं, जहाँ से वर्षा जल प्रवाहित होकर निचले भाग में आता है। इन जल स्रोतों में वर्षा ऋतु के अलावा पानी नहीं रहता।

सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर से गुजरता 260 किलोमीटर लम्बा हिंडन प्रवाह गौतमबुद्ध नगर जनपद के तितवारा गांव के निकट दक्षिण में (195 मीटर की ऊँचाई पर) यमुना नदी में मिल जाता है। हिण्डन-यमुना संगम एक विस्तृत खादर क्षेत्र है, जिसमें गांवों की संख्या कम है। अहा-चुहारपुर तथा गढ़ी समस्तपुर इस खादर के मुख्य गाँव हैं।

नदी का धरातलीय ढाल

हिंडन नदी के उद्‌गम से संगम तक की कुल लम्बाई 260 किलोमीटर है तथा ऊँचाई का अन्तर 155 मीटर है यानी कि नदी तल का प्रति किमी औसत ढाल 60 सेमी है। हिंडन की सहायक नदियों का प्रति किलोमीटर प्रवाह ढाल इस प्रकार है :

1.	नागदेवी	1.80 मी/किलोमीटर
2.	नागदेवी-धमोला	1.20 मी/किमी
3.	धमोला-काली	0.59 मी/किमी
4.	काली कृष्णी	9.29 मी/किमी
5.	कृष्णी-यमुना	0.20 मी/किमी
6.	हिंडन उद्‌गम- यमुना संगम तक	0.60 मी/किमी

हिंडन जल प्रवाह तन्त्र एवं प्रदूषण

प्रदूषण की दृष्टि से हिंडन जल प्रवाह तन्त्र को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1. नागदेवी-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र
2. पांवधोई-धमोला-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र
3. काली-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र
4. कृष्णी-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र
5. निचला हिंडन जल प्रवाह तन्त्र (बरनावा से हिंडन-यमुना संगम)

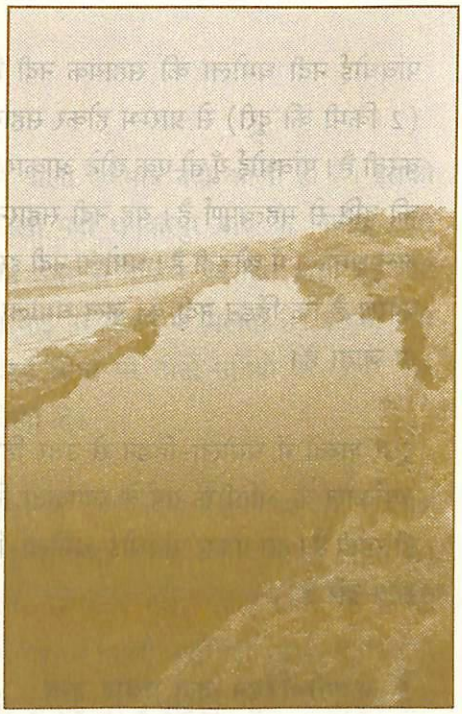

1. नागदेवी-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र

नागदेव नदी हिंडन की प्रथम सहायक नदी है, जो कि यह हिंडन नदी के उद्गम परिक्षेत्र के पश्चिमी भाग में 430 मी. के ऊँचाई वाले भूभागों से प्रारम्भ होती है तथा 277 मीटर की ऊँचाई पर हिंडन में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई 41 किलोमीटर है। प्रति किलोमीटर ढाल 1.83 मीटर है। तीव्र ढाल होने के कारण वर्षा ऋतु के अलावा नागदेवी नदी जल विहीन ही रहती है। हाँ! वर्षा ऋतु में नागदेवी नदी का जल बहाव अवश्य तीव्र रहता है। नदी के उद्गम से हिण्डन संगम तक इस नदी में जल प्रदूषण नगण्य है। नागदेवी का एक अन्य नाम नागदेई भी है।

2. पांवधोई-धमोला-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र

नागदेवी नदी के पश्चिमी उच्च भू-भाग से 337 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है खुर्रमपुर ग्राम। इसके निकट धमोला नदी का उद्गम स्थान है। धमोला नदी हिण्डन की दूसरी

महत्वपूर्ण सहायक नदी है। यह सरगथाल गाँव के निकट 262 मीटर की ऊँचाई पर हिण्डन नदी में मिलती है। धमोला नदी की लम्बाई लगभग 52 किलोमीटर है। इसकी प्रति किमी औसत ढाल 1.23 मी है, जबकि नागदेवी-हिण्डन संगम तथा धमोला-हिंडन संगम के मध्य प्रति किमी औसत ढाल 1.2 मी है।

पांवधोई नदी धमोला की सहायक नदी है, जो कि सहारनपुर नगर के उत्तरी भाग (2 किमी की दूरी) से प्रारम्भ होकर सहारनपुर नगर के निकट धमोला नदी में संगम करती है। पांवधोई यूँ तो एक छोटे आकार की छोटी नदी है, परन्तु प्रदूषित जल वाहक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह नदी सहारनपुर नगर एवं निकटवर्ती भागों का प्रदूषित जल धमोला में छोड़ती है। धमोला नदी इस प्रदूषित जल को हिंडन में छोड़ती है। यही कारण है कि हिंडन नदी का जल धमोला-हिंडन संगम से दक्षिण में अधिक प्रदूषित हो जाता है।

दूसरे शब्दों में धमोला-हिंडन से उत्तर हिंडन नदी का जल प्रदूषण विहीन रहता है। वर्षाकाल के अतिरिक्त वर्ष के ज्यादातर दिनों के दौरान इस भाग में नदी जल विहीन ही रहती है। इस प्रकार पांवधोई-धमोला-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र जल प्रदूषण का प्रथम स्रोत द्वार है।

3. कृष्णी-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र

सहारनपुर जनपद के उत्तरी-पश्चिमी उच्च मैदानी भाग से कृष्णी नदी का जल स्रोत प्रारम्भ होता है। इसकी लम्बाई लगभग 78 किमी है। पांवधोई नदी के पश्चिम में लगभग 280 मीटर की ऊँचाई से 'शाहपुर नाला' के रूप में तथा उसके दक्षिण में 'मेंगादयपुर नाला' तथा सहारनपुर नगर के पश्चिम में 'कृष्णी नाला' के रूप में प्रवाहित होती है। कैरी ग्राम तक इसे कृष्णी नाला ही कहते हैं।

कैरी गांव की ऊंचाई 245 मीटर है। कैरी गांव से दक्षिण में कृष्णी चौड़ी होकर नदी का आकार ले लेती है। इसके बाद बरनावा (संगम) तक इसमें वर्षभर जल रहता है। बरनावा के दक्षिण में 218 मीटर की ऊंचाई पर कृष्णी नदी जब हिंडन

नदी में मिलती है तो एक विस्तृत जल भराव तथा खादर क्षेत्र बनाती है। कृष्णी-हिंडन संगम के चतुर्दिक लगभग 12.15 किमी का खादर क्षेत्र है। कैरी गांव से उत्तर में नदी नाले के रूप में प्रवाहित होती है। कैरी से दक्षिण एलय तक 2 से 3 किमी का खादर क्षेत्र है, जबकि एलय से बरनावा के मध्य खादर की चौड़ाई 5 से 10 किमी तक हो जाती है।

4. काली-हिंडन जल प्रवाह तंत्र

हिंडन नदी के पूर्वी भाग में प्रवाहित होने वाली एकमात्र नदी काली ही है। इसकी कुल लम्बाई लगभग 75 किमी है। काली नदी धनकरपुर गांव के निकट 290 मीटर की ऊंचाई से प्रारम्भ होती है तथा उत्तर से दक्षिण प्रवाहित होती हुई पिट लोखर गांव के निकट 221 मीटर की ऊंचाई पर हिंडन में मिलती है। इसका प्रति किमी ढाल 1.20 मीटर है। काली-हिंडन संगम पर दोनों नदियों के खादर क्षेत्र की औसत चौड़ाई लगभग 3 से 5 किमी है।

काली नदी के पश्चिम में सिला नदी उत्तर से दक्षिण प्रवाहित होकर 275 मीटर की ऊंचाई पर हरियावास गांव के निकट पश्चिमी काली नदी में मिल जाती है। कस्बा देवबन्द से लगभग 7 किमी उत्तर रस्तमपुर तथा वनेरा खास के निकट काली नदी की दो शाखाएं हैं। दोनों को पश्चिम काली नदी कहा जाता है। काली नदी की पूर्वी शाखा के रूप में 272 मी ऊंचाई पर इन्दूखरक गांव के निकट एक तीसरी काली नदी मिलती है। इस प्रकार रस्तमपुर गांव से उत्तर में तीन धाराएं पश्चिमी काली नदी के नाम से प्रवाहित होती हैं। इनके संगम से नीचे दक्षिणी भागयानि रस्तमपुर गांव में काली नदी में वर्ष भर जल रहता है। ये विस्तृत खादर बनाती हैं।

काली-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र भाग में सहारनपुर-मुजफ्फरनगर का उपजाऊ कृषि उत्पादक क्षेत्र सम्मिलित है। यहां गन्ना-गेहूं प्रमुख फसलें हैं। फसलोत्पादन में उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं का अत्यधिक प्रयोग होता है। काली-हिंडन जल प्रवाह तन्त्र एक ऐसे विस्तृत समतल उपजाऊ मैदानी भू-भाग पर फैला है, जहां

सघन कृषि उत्पादन कार्य होता है तथा सिंचाई के लिए वर्ष भर जल निकासी होती है इसलिए भूजल स्तर निरन्तर कम होता जा रहा है। स्वाभाविक है कि इससे नदी जल स्तर स्वतः प्रभावित होता है और यह भी सर्वमान्य है कि नदी जल स्तर गिरने से जल प्रदूषण ज्यादा प्रभावी नजर आता है।

5. हिण्डन नदी का निचला जल प्रवाह तन्त्र (बरनावा से हिण्डन-यमुना संगम तक)

इस भाग में हिंडन नदी की लम्बाई 112 किमी है। कृष्णी-हिंडन संगम की ऊंचाई 218 मीटर है, जबकि हिंडन-यमुना संगम की ऊंचाई 195 मीटर है। दूसरे शब्दों में 112 किमी पर ढाल का अन्तर यहां 23 मीटर है। इस प्रकार प्रति किमी ढाल केवल 20 सेमी है। हिंडन के इस निचले प्रवाह तंत्र को दो उप भागों में भी बांट सकते हैं –

क. कृष्णी-हिंडन संगम से गाजियाबाद (76 किमी)

ख. गाजियाबाद से हिंडन-यमुना संगम (36 किमी)

कृष्णी-हिंडन संगम (बरनावा) से गाजियाबाद कट तक हिंडन की लम्बाई 76 किमी है, जबकि दोनों के मध्य ऊंचाई का अन्तर केवल 12 मीटर है। इस प्रकार प्रति किमी ढाल 29 मी. हुआ। गाजियाबाद से हिंडन-यमुना संगम की दूरी 36 किमी है, जबकि ऊंचाई का अंतर केवल 11 मीटर है अर्थात् प्रति किमी ढाल 20 सेमी है। गाजियाबाद से हिंडन कट के नाम से एक नहर निकलती है, जिससे इस बिन्दु से हिंडन का जल सीधे यमुना नदी में मिलता है। वहां से आगे यमुना नदी जलाशय से आगरा नहर निकलती है। इस प्रकार हिंडन में आगे हिंडन-यमुना संगम तक जलाभाव हो जाता है। संगम पर यह नदी नहीं, नहर सी लगती है।

जागो ! वीरो ! राष्ट्र जगाओ।
हरनन्दी को शुद्ध बनाओ॥

2. हिंडन की आत्मा

कृष्णपाल सिंह

(लेखक एक विवेकी सामाजिक कार्यकर्ता हैं और हिंडन प्रदूषण मुक्ति अभियान के संयोजक हैं।)

हिंडन की देह को तो आप जान गए, पर हिंडन की आत्मा को जाने बगैर देह को नीमबेहोशी की हालत से वापस नहीं लाया जा सकता।

क्या आप हिंडन की आत्मा को जानते हैं...? हिंडन की आत्मा है – हरनन्दी। हरनन्दी यानी शिव का नन्दी। शिव के नन्दी को तो आप जानते भी होंगे... और पूजते भी, किन्तु हरनन्दी को तो शायद अब आप पहचान भी न सकें। इसी हरनन्दी में हिंडन नदी के प्राण बसे हैं। जैसे अग्नि, जल, वायु, सूर्य और पृथ्वी... ये पंचतत्त्व मिलकर एक जीवन का निर्माण करते हैं। ऐसे ही कभी पंचसखी पंचतीर्थ और पंच परमेश्वर ने मिलकर हिंडन की देह को जीवंत और शोभायमान बनाया हुआ था। इन पांच सखी-सहेलियों के बारे में तो पिछले पन्नों में आप पढ़ ही चुके। हिंडन में मिलने वाली छोटी-बड़ी धाराएं ही ये सखियां हैं। पांच तीर्थों की चर्चा करें तो इनमें से तीन जिला बागपत में स्थित हैं – लाक्षागृह (बरनावा), पुरेश्वर महादेव (पुरा) और वाल्मीकि आश्रम (बालैनी)। गांव सुराना का महादेव मंदिर और मोहन नगर के निकट श्मशान भूमि से लगा गायत्री शक्तिपीठ... ये दोनों तीर्थ जिला गाजियाबाद में स्थित हैं।

जब तक पांच तीर्थ, पांच सखी और पंचमहाभूतों के प्रति लोगों के मन में सच्ची आस्था और श्रद्धा का भाव प्रबल था, तब तक हरनन्दी के साथ हमारा जीवंत संबंध बना रहा। हरनन्दी का पितृभाव हमें सींचता रहा; हरनन्दी प्रवाह पिता कहलाया और हम संतानें। हम हरनन्दी का विस्तार करते रहे और हरनन्दी का प्रवाह हमें पुष्ट करता रहा; गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत जनपदों में शौर्य, संकल्प और उत्थान की नई इबारतें लिखी जाती रहीं, अच्छे-बुरे, स्वार्थ-परमार्थ की समझ बनी रही; लेकिन जैसे ही हमने सजीव पंचमहाभूतों को निर्जीव की वैज्ञानिक परिभाषा में ढाला, देवात्मा मानकर पूजे जाने वाले प्रवाह को हम नदी कहने लगे। कुछ ने एक साजिश के तहत इसे नाला कहने से भी परहेज नहीं किया। भरे दिन में हमने आंखें मूंद लीं। हरनन्दी पहले हरनेन्द्री हुई, फिर हिंडन। अगर कुछ दशक और हम ऐसे ही सोते रहे तो न हिंडन रहेगी और न हिंडन को पहचानने वाले लोग। तब सब किस्सा ही खत्म हो जायेगा।

हां! और क्या? जब आत्मा यानी हरनन्दी को ही हमने मार दिया, तो देह भी कब तक जीवित रहेगी? श्रीकृष्ण कहते रहें – "आत्मा अजर है, अमर है" पर हमने तो उसे मार ही दिया। इंसान जब खुद भगवान बनने पर आमादा हो तो सत्यानाश तो सुनिश्चित ही है। खासकर... स्वार्थी इंसान!

3. हिंडन का सत्यानाश

अरुण तिवारी

(कलम-कैमरे को औजार बना सामाजिक सरोकारों के प्रति दायित्व निर्वाह को प्रत्यनशील युवा)

मुझे नहीं मालूम यह 'नद्य हरनन्दी' से 'हिंडन' कब हुआ, पर इतना अवश्य जानता हूं कि हिंडन होते ही इसका पिता स्वरूप मर गया। यह हमें जीवन देने वाला न होकर जीवन लेने वाला प्रवाह हो गया। यह सब पिछले पचास-साठ वर्षों में ही हुआ। अंग्रेजी शब्दावली ने न सिर्फ नदी का नाम बदला, बल्कि इस नई पढ़ाई ने नदी के मुहावरे भी बदल दिए। पिता कहलाने वाला प्रवाह पहले नदी और फिर नाला कहलाने लगा। सिर्फ हिंडन का सत्यानाश हुआ हो, ऐसा नहीं ... अब खुद हिंडन ने एक विषधर का रूप धारण कर लिया है। कालियादह, जो अब हम सब को डस रहा है।

दरअसल हिंडन और उसकी सहायक धाराओं ने हमें सालों-साल खूब पानी पिलाया। जैसे अधिक लाड़ से संतानें बिगड़ जाती हैं, वैसे ही हम भी बिगड़ गए। हिंडन की आत्मा को विस्मृत करने के तो हम सभी दोषी हैं। इसमें कोई दो राय नहीं; लेकिन हिंडन की देह का नाश तो सबसे ज्यादा नदी किनारे के उद्योगों और शहरी मल व कचरा निपटान के लिए जिम्मेदार तंत्र ने किया।

कृषि में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक-कीटनाशक का अधिक उपयोग तथा पारंपरिक जल संरचनाओं की उपेक्षा भी इसमें सहयोगी सिद्ध हुए हैं।

प्रथम द्वार

ऊपरी तौर पर देखें तो धमोला-हिंडन संगम... जहां से नीचे नदी में बारह महीने पानी दिखाई देता है, ठीक वहीं से नदी प्रदूषित होनी शुरू हो जाती है। इस स्थान को हिंडन में प्रदूषण का प्रथम द्वार कहा जा सकता है।

हिंडन प्रदूषण पर गांव वालों तथा हिंडन प्रदूषण मुक्ति अभियान के स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए प्रारंभिक सर्वेक्षण से पता चला है कि ऊपर सहारनपुर में ही क्रमशः कागज, स्टील, शराब की 13 में से 11 मिलें जल को बीमार बना रही हैं :

उद्योग	उत्पाद	बहिस्राव का स्वरूप	निकटवर्ती ग्रामवासियों की प्रतिक्रिया
आई.टी.सी., सहारनपुर	सिगरेट	नहीं दिखा।	पानी नहीं निकलता। बहिस्राव को साफ कर पौधों को देते हैं।
किसान को-ऑपरेटिव शुगर फैक्टरी लि., सरसावा, सहारनपुर	चीनी	बदबूदार प्रदूषित स्राव नाले से होकर सेंधली नदी में मिलता है।	हवा में बदबू घुल सी गयी है।
किसान सहकारी चीनी मिल लि., ननौता, सहारनपुर	चीनी	एक नाले के माध्यम से इसका बदबूदार बहिस्राव कृष्णी में मिलता है	हवा चलने पर बहुत दुर्गन्ध आती है। मच्छर भी काफी रहते हैं।
शाकुम्भरी शुगर एंड एलायड लि., रसूलपुर (सहारनपुर)	चीनी स्टील बिजली	पानी एक नाले के माध्यम से यमुना में मिलता है।	अत्यंत दुर्गन्धित/काफी मच्छर।
स्टार शुगर कॉरपोरेशन लि., बिडवी, गंगोह रोड, सहारनपुर	चीनी	बदबूदार बहिस्राव यमुना नदी में जाता है	हवा चलने पर तीखी बदबू। बोरवैल का पानी पी नहीं सकते। गहरे बोरवैल का पानी भी बर्तन में रखें तो बर्तन पीले हो जाते हैं।

गंगेश्वर लि., देवबन्द, सहारनपुर	चीनी	लाल रंग का प्रदूषित स्राव नाले से होकर काली नदी में मिलता है	बदबू की वजह से नाले के पास के लोगों का जीना हराम है।
शाकुम्भरी शुगर एंड एलायड इंडस्ट्रीज लि., टोडरपुर, बेहर, सहारनपुर	शराब	बदबूदार बहिस्राव एक नाले से होकर बूढ़ यमुना में मिलता है।	बहुत ही खतरनाक-जहरीला पानी। बदबू आती है।
एस.एम.सी. फूड लि., ननौता, सहारनपुर	दूध पाउडर	प्रदूषित बहिस्राव एक नाले से होकर भनेड़ा गांव के पास कृष्णा नदी में मिलता है	पानी से बदबू आती है।
स्टार पेपर मिल लि., सहारनपुर	कागज पेपर बोर्ड	काला, पीला व लाल रंग का प्रदूषण-युक्त बहिस्राव परागपुर गांव के पास हिंडन में गिरता है।	नाले में पानी का रंग व गंध दोनों का प्रभाव है। इस पानी से 3-4 बार फसल सींचें तो खेत खराब हो जाता है।
दया शुगर, सहारनपुर	चीनी	रंगहीन स्राव सीधा हिंडन में मिलता है।	इससे नहाने पर खाज-खुजली ठीक हो जाती है। इस बहिस्राव से लोग सिंचाई भी करते हैं।
दि कोऑपरेटिव कंपनी लि., युसुफपुर रोड. टपरी, सहारनपुर	शराब	खतरनाक, बदबूदार स्राव जो स्टार पेपर मिल के बहिस्राव के साथ हिंडन में मिलता है	यह स्राव बदबूदार होने के साथ-साथ खतरनाक जहर सरीखा है।
पिलखनी केमिकल्स एंड डिस्टलरी, पिलखनी, सहारनपुर	शराब	बदबूदार पीला बहिस्राव नाले से होकर सेंधली नदी में मिलता है	गांव बदबू से परेशान है। नल और बोरवैल दोनों खराब हो चुके हैं। बीमारियां बढ़ रही हैं।
किसान चीनी मिल (निकट ननौता) सहारनपुर	शराब एल्कोहल	पीला बदबूदार बहिस्राव कृष्णी नदी में मिलता है।	हवा के साथ बदबू आती है। मच्छर हमेशा बने रहते हैं।

सहारनपुर में शहरी आबादी का मल-मूत्र व कचरे का प्रदूषण भी कम नहीं है। सीवेज ट्रीटमेंट की व्यवस्था है, लेकिन अपर्याप्त बिजली आपूर्ति और मल शोधन संयंत्र की क्षमता और उपलब्ध मल की मात्रा में अंतर के कारण और प्रयास जरूरी हैं।

द्वितीय द्वार

काली-हिंडन संगम को हिंडन में प्रदूषण का द्वितीय द्वार कहा जा सकता है। यह द्वार साधारणतया कृषि-खनिज जनित प्रदूषण के स्रोत खोलता है। यहां का विस्तृत मैदानी भाग अत्यधिक उर्वरक व कीटनाशक उपयोग की चपेट में है। यहां चीनी मिलें भी हैं और मुजफ्फरनगर-खतौली देवबंद जैसे घनी आबादी के नगर भी। आबादी का मल भी नदी में ही जाता है, किन्तु कृषि रसायन, भूजल की निकासी तथा यहां ईंट-भट्टे भी हिंडन के लिए कम बड़ा संकट नहीं।

यह आभास यहां के लोगों में यदि अभी पूरी तरह नहीं है तो इसका एक कारण हिंडन-धमोला संगम के उत्तर में नदी का अत्यधिक ढालू तल है। नदी का मौसमी स्वरूप भी इसका एक कारण है। जैसे ही हिंडन का ढाल कम होता है और जल में मल व भूमि कटाव बढ़ता है... हिंडन में प्रदूषण की भयावहता उजागर होने लगती है। ऊपर के इलाके द्वारा किए गए प्रदूषण का खामियाजा भी नीचे की आबादी को भुगतना पड़ रहा है। हिंडन प्रदूषण का मुख्य शिकार वर्तमान बागपत और गाजियाबाद जिला है।

तृतीय द्वार

गाजियाबाद की 12 लाख की महानगरीय आबादी और उद्योगों के जमावड़े की दृष्टि से इसे हिंडन प्रदूषण का तीसरा द्वार कहा जाना चाहिए। प्रदूषण की दृष्टि से हिंडन जल प्रवाह क्षेत्र को तीन खण्डों में विभाजित कर देखना अच्छा होगा:

1. धमोला-हिंडन संगम तक का क्षेत्र,
2. धमोला-संगम से कृष्णी-हिंडन संगम तक,
3. कृष्णी-हिंडन संगम से दक्षिण की ओर हिंडन-यमुना संगम तक।

प्रदूषित नदी : सुप्त समाज

यदि हिंडन प्रदूषण के दुष्प्रभावों का आकलन करें तो गाजियाबाद के हिस्से में कुछ ज्यादा ही अंधेरा है। गाजियाबाद में दुष्प्रभाव अधिक हैं तो प्रदूषण भी। सीवेज सीधा नदी में जाता है। कई नाले सीधे नदी में मिल रहे हैं। वायु में घुले प्रदूषित कण भी अन्ततः धरातल पर ही लौटते हैं। नदी में जल से ज्यादा मल है। साथ ही ढाल कम होने के कारण भी पानी सड़ने लगा है। हाँ! गंग नहर से कभी–कभी छोड़ा गया साफ जल इसका रंग जरूर बदल देता है।

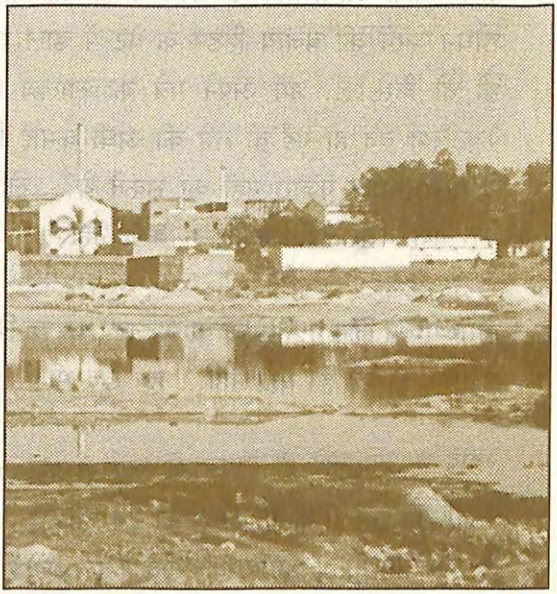

स्थितियां निश्चित ही डराने वाली हैं। यहां अफसोस तो इस बात का है कि उत्तर प्रदेश का यह पश्चिमी इलाका अपराध के नक्शे पर तो नंबर वन नजर आता है; आर्थिक समृद्धि भी यहां कम नहीं, लेकिन माता–पिता सरीखे नदी प्रवाहों को मारने की साजिश में लगे उद्योग मालिकों की निगाह में यहां के लोगों की ताकत जैसे कुछ नहीं। उद्योग मालिक, प्रदूषण बोर्ड और नगर निगम तो जैसे यहां की आबादी को कुछ समझते ही नहीं। कोई भय नहीं। जो औद्योगिक समूह गुजरात में फैक्टरी बाद में लगाता है, कचरा साफ करने के लिए शोधन संयंत्र पहले लगाता है; वही समूह इस इलाके में शोधन संयंत्र लगाने की कोई चिन्ता नहीं करता। कई एक फैक्टरियों में संयंत्र हैं भी तो या तो क्षमता जरूरत से कम है या फिर वे उन्हें चलाते ही नहीं। नतीजा - हिंडन आज उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक प्रदूषित नदी है।

गांव शुभानपुर के निकट एक फैक्टरी ने बोर कर सीधे जमीन के भीतर कचरा बहा दिया। जब यह जहरीला तरल कचरा धरती की नसों से होता हुआ गांव शुभानपुर के हैंड पम्पों में पहुँचा तो एक माह के भीतर करीब 36 मौतें हुईं। जवाहर नवोदय विद्यालय सर्फाबाद (बागपत) में 30 छात्र भयानक पेचिस की गिरफ्त में आ गए। गाजियाबाद, बागपत, मेरठ, मुजफ्फरनगर और सहारनपुर में कैंसर, पीलिया और आंत्रशोथ के मामले बढ़े तो भी हमारा मन चेतन नहीं हुआ। फैक्टरियां हिंडन में विष घोलती रहीं और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड 'पॉल्युशन अंडर कंट्रोल' का सर्टिफिकेट बांटता रहा। आज भी केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की नाक के नीचे हमारी आवाजाही के रास्ते में ही गाजियाबाद नगर निगम शहरों का मल शोधन करने की बजाय हिंडन के पेट में डाल रहा है और हम सो रहे हैं। जागें भी तो कैसे?... हमें अपने गन्ने का लालच जो है । अगर शुगर–शराब की फैक्टरियां बंद हो गईं तो गन्ने की अंधी कमाई फिर कहां मिलेगी। क्या हम गन्ने से गुड़ बनाकर गुजारा नहीं कर सकते थे?.. लेकिन नहीं, हमें प्राण और आत्मा का नाश मंजूर है... कमाई में कमी नहीं।

हमारे गन्ने ने जिन गन्ना मिलों या मालिकों को पुष्ट किया, आज वही नदी को सर्वाधिक प्रदूषित कर रहे हैं। वही नहीं... हम खुद भी।

स्वाद व गुण भले ही गायब हो गया हो पर रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक अभी भी खूब मात्रा में फसल तो देते ही हैं... पर जैसे धरती का पानी उतर रहा है और उतरेगा... हमारे यही खेत बंजर बनेंगे। फिर आज जिस गन्ने का लालच हमें प्रदूषक गन्ना फैक्टरियों का विरोध करने से रोक रहा है, कल वह गन्ना ही न होगा। जब गन्ने लायक मिट्टी ही न बचेगी, तब बोना... गन्ना कहां बोओगे?

समझने की जरूरत है कि कृषि रसायन कुछ तो जमीन के भीतर उतर कर और कुछ ऊपर ही बहकर हिंडन की जैविकी बदल रहे हैं। अब इस नदी में न वे मछलियां रहीं... न मगरमच्छ। ये जीव–जन्तु ही पहले मृत देह के शेष हिस्से आदि को खाकर नदी को साफ रखते थे। अब जब ऐसे जीव न रहे, तो नदी

किनारे शवदाह का संस्कार और अधिक कष्टदायी बनता जा रहा है। रसायन और मलयुक्त हिंडन की देह निचुड़ कर धरती के नीचे उसकी नसों को विषाक्त कर रही है। यही विष हमारे कुओं, ट्यूबवैलों और हैंड पम्पों के जरिए हमारी फसल, भोजन और शरीर का सत्यानाश कर रहा है। यह भी समझना जरूरी है कि जैसे अनुचित व प्रदूषित खानपान पहले हमारी पाचन क्रिया, फिर रस... फिर कोशिका...ऊतक और अंततः अंगों को कैंसर की स्थिति में पहुंचा देता है, वैसे ही जल का प्रदूषण धरती, वायु, वनस्पति और इस पर निर्भर जीवों का सत्यानाश कर देता है।

पहले ताल–तलैयों, बावड़ियों के जरिए नदी का ऊपरी और धरती का भीतरी जल काफी समृद्ध रहता था; सो छोटा–मोटा प्रदूषण तो नदी खुद ही साफ कर लेती थी। अब मकान पक्के बनने लगे, तो तालाबों से गाद निकालने का काम भी बंद हो गया। पुराने तालाबों पर खेती हो गई या मकान बन गए और नये तालाब अब यहां कोई बनाता नहीं। इस इलाके में बड़ी बर्बादी ईंट के भट्टों ने भी की। इस तरह एक–एक कर हमने प्रकृति के सत्यानाश के सारे रास्ते खोल दिए हैं। कारखाना मालिक हिंडन को 'निजी संपत्ति' मानकर इसमें गंदगी बहा रहे हैं, लेकिन हम ग्रामवासी हिंडन को 'सामुदायिक विरासत' मानकर इसमें स्वच्छ धारा आज तक नहीं बहा सके हैं।

कहना न होगा कि हिंडन की देह तो बाद में बीमार हुई... हमारी आत्मा का सत्यानाश पहले हुआ। अब हमारी देह का होगा। हमारी खेती भी जाएगी और हम भी। फिर सोचना निरर्थक होगा। जरूरी है कि हम आज सोचें... अभी!

हिंडन का जल क्यों गंदा है।
शासन का टेढ़ा धंधा है॥

4. हिंडन की प्रदूषण मुक्ति

कुलदीप सिंह

(हिंडन प्रदूषण मुक्ति अभियान के सक्रिय कार्यकर्ता)

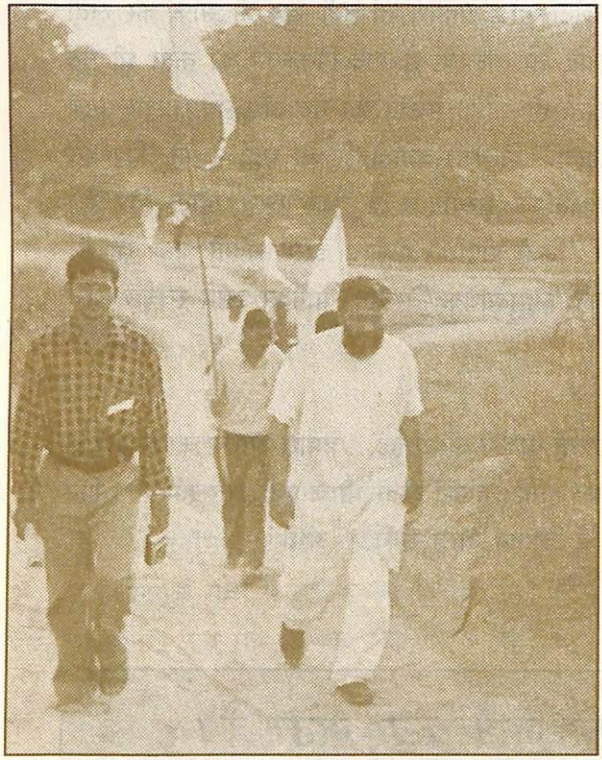

इस गोल दुनिया में जहां से शुरू करें, उसे ही पहला मान सकते हैं। देह और आत्मा चाहे हिंडन की हो या हमारी; जो हिंडन का है, वह हमारा है और जो हमारा है वह सब हिंडन का भी है। अत: देह को जगाना है तो आत्मा को जगाना होगा और आत्मा को जगाना है तो...देह को जगाये बगैर यह अब सम्भव नहीं।

यही कुछ सोचकर गांधी जयंती के चार दिन बाद 06 अक्टूबर, 2004 को ग्राम डौला, डौलचा, सिंघावली,

बालैनी, मोहम्मदपुर धूमी, स्थानीय कॉलेज व जिला मेरठ की 21 पुण्यत्माएं वाल्मीकि आश्रम में संकल्पित हुईं। रजिस्टर के पहले पन्ने पर लिखा गया– 'जय ओम् हरनन्दी'।

संयोग अच्छा था। पानी को प्रवेश बिंदु बनाकर राजस्थान के हजारों गांवों की देह और आत्मा दोनों को जागृत करने वाला एक चैतन्य पुरुष भी हरनन्दी की व्यथा से व्यथित हो उठा। हमेशा धरती का पेट भरने और उसका श्रृंगार वापस लौटाने की चुनौती को स्वीकार करने वाले इस चैतन्य पुरुष ने हिंडन की प्रदूषण मुक्ति को अपनी जन्मभूमि की पुकार समझ अपना लिया। इस तरह श्री राजेन्द्र सिंह का संगठन- 'राष्ट्रीय जल बिरादरी' इस संकल्प की एक प्रमुख वैचारिक शक्ति बन गया।

वाल्मीकि आश्रम के सर्वश्री लक्ष्यदेवानंद जी महाराज के संरक्षण और श्री अनूप सिंह की अध्यक्षता में हिंडन प्रदूषण मुक्ति पदयात्रा का तत्काल निर्णय हो गया। कृष्णपाल सिंह और श्री संजीव दाका ने जनसंपर्क व यात्रा की तैयारी की जिम्मेदारी संभाल ली।

सैद्धान्तिक तौर पर तय हुआ कि 'हिंडन प्रदूषण मुक्ति पदयात्रा' लोगों को जोड़ने, जगाने तथा नदी व उसके प्रदूषण को समझने–समझाने का काम करेगी। इस अभियान में न कोई हिंदू होगा, न मुसलमां, न सिख, न ईसाई... न जाट, न यादव... न ब्राह्मण, न क्षत्रिय... न गरीब, न अमीर...और न कोई अन्य; यहां तो सभी हरनन्दी की संतानें भर होंगी... सिर्फ संतानें...माता–पिता की सेवा-सुश्रुषा को तत्पर प्राणी मात्र।

तत्पश्चात् 05 नवम्बर, 07 नवंबर, 14 नवंबर, 19 नवंबर और 21 नवंबर को हुई भिन्न तैयारी बैठकों और निर्णयों के जरिए यात्रा का मार्ग, पड़ाव, संचालन, सहयोग और दायित्वों का निर्धारण कर लिया गया।

यात्रा पूर्व तैयारी बैठकें

तिथि	स्थान	संयोजक
05.11.2004	बरनावा	श्री विजय कुमार त्यागी
07.11.2004	मुजफ्फरनगर सिटी	श्री नंदकिशोर शर्मा
14.11.2004	वाल्मीकि आश्रम	महंत श्री लक्ष्यदेवानंद जी
19.11.2004	सुराना तीर्थ	श्री फोटो सिंह
21.11.2004	कार्टे संस्थान, गाजियाबाद	डॉ. एस. डी शर्मा

यात्रा के प्रथम चरण हेतु 34 यात्रियों की सूची भी आनन–फानन में तैयार हो गई।

हिंडन प्रदूषण मुक्ति पदयात्रा

प्रथम चरण (22 नवंबर, 2004 से 26 नवंबर, 2004 तक)

उद्देश्य – हिंडन नदी को प्रदूषण मुक्त करने के उद्देश्य से नदी और उसके प्रदूषण को समझना-समझाना तथा लोगों को इससे जोड़ना और जगाना। उल्लेखनीय है कि हिंडन के प्रदूषण मुक्त तथा सजल होने से आसपास के इलाके का प्राकृतिक कोष स्वत: समृद्ध होगा।

आयोजक – राष्ट्रीय जल बिरादरी, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)

सहयोगी संगठन –

1. ग्रामीण एवम् पर्यावरण विकास संस्था, डौला (बागपत), उत्तर प्रदेश
2. वाल्मीकि आश्रम, बालैनी (बागपत), उत्तर प्रदेश
3. युवा ग्राम सुधार समिति, ढिकोली (बागवत), उत्तर प्रदेश

4. दायित्वशीलता टाइम्स, हमीदाबाद (बागपत), उत्तर प्रदेश

5. ओम्कार महिला स्वयं सहायता समूह, मीतली (बागपत), उत्तर प्रदेश

6. जनहित फाउण्डेशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश

7. समीक्षा (सामाजिक स्वैच्छिक संस्थान), गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

8. नवज्ञान हरित क्रांति सोसाइटी, देहरादून, उत्तरांचल

9. गांधी शांति प्रतिष्ठान, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

10. तरुण भारत संघ, भीकमपुरा (अलवर), राजस्थान

11. मीडियामैन सर्विसेज, सुभाष चौक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली

कार्य-विभाजन

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन – श्री राजेन्द्र सिंह (अध्यक्ष, राष्ट्रीय जल बिरादरी, जयपुर)

संचालन – श्री रमेश शर्मा (अध्यक्ष, गांधी युवा बिरादरी, नई दिल्ली)

संयोजक – कृष्णपाल सिंह (सचिव, ग्रामीण एवम् पर्यावरण विकास संस्थान, डौला, बागपत, उत्तर प्रदेश)

आध्यात्मिक/नैतिक सहयोग– महंत लक्ष्यदेवानंद जी, राजा गोपाल सिंह (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, राजस्थान), श्री सतीश (योगी पुरुष, लंदन) और श्री अरविंद कुशवाह (अध्यक्ष, पूर्वी उ. प्र. जल बिरादरी, कानपुर) एवम् डा. सत्यदेव शर्मा (सेवानिवृत्त पुलिस उपाधीक्षक, गाजियाबाद)

वैज्ञानिक अध्ययन प्रभार– डॉ. बी.बी. सिंह (पूर्व प्राचार्य, एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद)

तकनीकी सलाहकार – डॉ. अनिल राणा (अध्यक्ष, जनहित फाउण्डेशन, मेरठ)

अन्वेषण प्रभार – श्री रोहित कुमार यादव (इंजीनियर, नेशनल हाइड्रो पावर कॉरपोरेशन लि., नई दिल्ली)

दस्तावेजीकरण प्रभार– प्राचार्य ईश्वर दत्त कौशिक, खट्टा प्रह्लादपुर, (बागपत) कुलदीप सिंह पुण्डीर (डौला) और लक्ष्यदीप, रावा मोहम्मदपुर (मेरठ)

प्रचार–प्रसार प्रभार– श्री संजीव ढाका (ढिकोली), योगेन्द्र वैदिक (मवीकलां)

सांस्कृतिक प्रभार– मा. जयपाल (धूमी मोहम्मदपुर), सुशील त्यागी (खिन्दोड़ा गाजियाबाद), योगेन्द्र वैदिक, आर्यवीर और ओमपाल शर्मा (मवीकला, बागपत)

विशेष उल्लेखनीय सहयोगी

ध्वजवाहक – महाराज अमरानन्द और ब्रह्मचारी यादगिरि जी महाराज

भोजन व्यवस्था– श्री देवेन्द्र भगत (बागपत)

वाहन व्यवस्था– श्री एल. डी. शर्मा, मीतली (बगावत)

वाहन चालक – सर्वश्री कैलाश शर्मा, (अलवर) उमेश कुशवाह एवम् सुशील कुशवाह, मीतली गोरीपुर (बागपत)

आर्थिक सहयोगी – जलपुरुष सर्वश्री राजेन्द्र सिंह, लक्ष्मीराज सिंह, अनूप सिंह, देवेन्द्र भगत, रोहित कुमार, मास्टर जयपाल सिंह, जयभगवान प्रधान, भगवान साहू, हरीकिशन यादव, दयास्वरूप त्यागी, जवाहर सिंह, ओम प्रकाश सिंह, बदलेव सिंह और एल.डी. शर्मा

प्रबंधक एवम् संगठन सहयोग – दरोगा रामकृपाल शर्मा (गायत्री शक्तिपीठ गाजियाबाद), श्री रामपाल आर्य (प्रधान, गढ़ी कलन्जरी, गाजियाबाद), वेदसिंह (प्रधान, ललियाना बागपत), कृष्णपाल सिंह (प्रधान, मवीखुर्द), तेजपाल सिंह (डौला), रणवीर सिंह आर्य (प्रधान, मवीकलां), आचार्य विजय कुमार त्यागी (बरनावा, लाक्षागृह), मनोज यादव व जय भगवान यादव (बालैनी), वीरप्रताप सिसौदिया (डौला), रामबीर पाचक (बागपत), कुलदीप आर्य (मवीकलां) और आत्मदेव कौशिक (खट्टा)

अन्य सहयोगी– डॉ. देवदत्त कौशिक (खट्टा), सतपाल सिंह बागपत (डौला) तथा बहन श्रीमती लेखा चौधरी, दर्शना शर्मा (मीतली) व सुनीता अग्रवाल (बागपत)।

स्थायी यात्री

जलपुरुष सर्वश्री राजेन्द्र सिंह, राजा गोपाल सिंह, रमेश शर्मा, अरविंद कुशवाह, सतीश, अरुण तिवारी, कृष्णपाल सिंह, बीर सिंह, ओमपाल शर्मा, वीरेन्द्र सिंह, कुलदीप सिसौदिया, वीर प्रताप सिसौदिया, संजीव ढाका, मास्टर ईश्वर दत्त कौशिक, एल. डी. शर्मा, उमेश सिंह, सुशील सिंह, कैलाश शर्मा, योगेन्द्र वैदिक, देवेन्द्र भगत जी, कुलदीप आर्य, आर्यवीर, रविकांत शर्मा, सतवीर सिंह, नरेश वीर, सुशील त्यागी, विनोद त्यागी, रामबीर सिंह, देवपाल, विनोद कुमार, मा. जयपाल सिंह, प्रमोद आर्य, स्वामी अमरानन्द, ब्रह्मचारी यादगिरि जी और लक्ष्यदीप।

यात्रा मार्ग के गांव (35)

सेवा ग्राम, नंदगांव, सिंहानी, मोरटी, अटोर, नंगला, भनेड़ा, भूपखेड़ी, सिरोरा, गढ़ी, गढ़ी कलंजरी, पूरनसर नवादा, फुलेरा, सर्फाबाद, सिघोली ब्राह्मण, सिघोली तगा, गोना, शुभानपुर, ललियाना, चमरावल, हरियाखेड़ा, कहरका, मुकारी, घटोली, डौला, बालैनी, हरियाखेड़ा, पुरामहादेव, गलहैता, मवीखुर्द, मवीकलां, चिरचिरा, गलहैता, बरनावा तथा लाक्षागृह।

यात्रा कहां से कहां तक

गायत्री शक्तिपीठ, (गाजियाबाद) से शुरू होकर लाक्षागृह बरनावा (बागपत) तक।

यात्रा के रात्रि पड़ाव

जिला बागपत के गांव-गढ़ी कलन्जरी, ललियाना, डौला और मवीकलां।

यात्रा के सभास्थल(12)

गाजियाबाद – गायत्री शक्तिपीठ (मोहन नगर) तथा ग्राम अटोर।

बागपत – ग्राम गढ़ी कलन्जरी, सर्फाबाद, ललियाना, चमरावल, कहरका, डौला, हरियाखेड़ा, मवीखुर्द, मवीकलां, चिरचिरा और लाक्षागृह बरनावा।

यात्रा दौरान संपर्क विद्यालय (10)

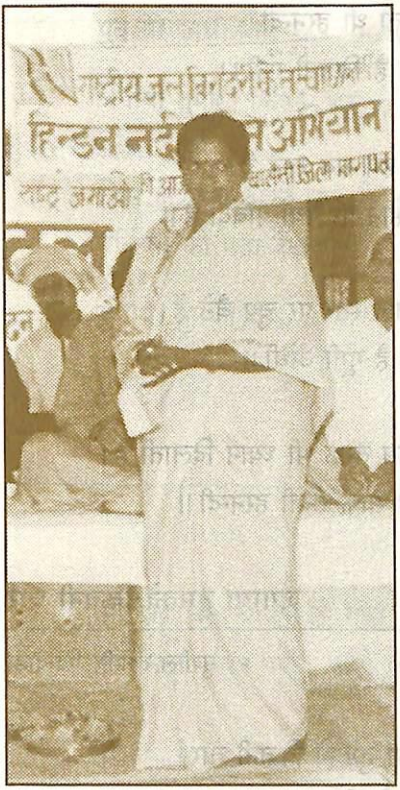

आदर्श हायर सेकण्डरी विद्यालय, गढ़ी कलन्जरी

नेहरू स्मारक इण्टर कॉलेज, फुलेरा

जवाहर नवोदय विद्यालय, सर्फाबाद

प्राथमिक पाठशाला, सिंघोली तगा

सरस्वती शिशु मंदिर, चमरावल

देव इंटर कॉलेज, डौला

पुरेश्वर कन्या हायर सेकण्डरी विद्यालय, पुरामहादेव

सरस्वती शिशु विद्यालय, पुरामहादेव

प्राथमिक पाठशाला, गलहैता तथा

महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बरनावा।

यात्रा के तीर्थ

गायत्री शक्तिपीठ (मोहन नगर, गाजियाबाद), महादेव मंदिर (सुराना, गाजियाबाद), वाल्मीकि आश्रम-लव कुश जन्मभूमि (बालैनी, सीमांत), पुरेश्वर महादेव (पुरा, बागपत) और लाक्षागृह (बरनावा, बागपत)।

5. हिंडन के स्वर

जब साफ रहेगी हरनन्दी

सुशील त्यागी, खिन्दौड़ा

मीठे जल से भरकर के, जहां बहती थी हरनन्दी।
आज वहीं पर देखो हिंडन, बहती है कितनी गंदी।।

पंचतीर्थी नाम इसी का, जिस पर हम सब रहते हैं।
मेलों का आयोजन करते, फिर नहाने पर क्यों पाबंदी है।।

सब दूषित जल से प्रभावित हैं, जल स्तर पर चुप बैठे हैं।
किससे है उम्मीद हमें, सरकार तो है गूंगी अंधी।।

नवज्ञान हरित क्रान्ति सोसाइटी, इस तरफ भी ध्यान दिलाती है।
गंगा-यमुना रहेगी साफ तभी, जब साफ रहेगी हरनन्दी।।

जगाया तुमको कितनी बार

सुशील त्यागी, खिन्दौड़ा

जगाया तुमको कितनी बार, बताया तुमको कितनी बार।
दूषित जल प्राणी मात्र को, करता है बीमार।।

फिर दबाते आपकी देहली, कभी निकाली चेतना रैली।
फोन किये मुसीबत झेली, निमन्त्रण नहीं किया स्वीकार।।

जगाया तुमको कितनी बार.....

भूगर्भ में माता आ गयी विष की, जनता में दहशत है जिसकी।
हिण्डन का जल हो गया रिस्की, इसमें ले आयो सुधार॥

जगाया तुमको कितनी बार.....

क्यों बैठे हो सदकर्म को खोकर, पूछ रही मां हरनन्दी रोकर।
पुत्र मेरे अभी नहीं उठे हैं सोकर, माँ हो गये गद्दार॥

जगाया तुमको कितनी बार.....

जिस क्षेत्र को अपने जल से सींचा, उसकी है यह आज परीक्षा।
यदि मां को पड़ा देखना नीचा, तो ऐसे पुत्रों को धिक्कार॥

जगाया तुमको बार.....

तने देख दिल घायल हो गया

योगेन्द्र वैदिक एवं आर्यवीर, मवीकलां

तने देख दिल घायल हो गया, हे हिंडन हरनन्दी।
था किसा पवित्र पानी, होगी कितनी गन्दी॥

तेरे किनारे गेहूँ काट्टा करते,
समझ के अमृत जल चाट्टा करते।
पी-पी के जल बांट्टा करते, खुशियां आखया नन्दी॥ 1॥

शामली तेरा दुश्मन हो गया, बहा नदी का नाला,
कदे नीला-नीला जल बहे था, आज हो गया काला।
तेरा जग में कौन रूखाला री, माँ आज सरकार हुई अंधी॥2॥
तने देख दिल ...

कदे ऋषि मुनि तप करे थे किनारे, कूड़ा करकट तेरे में डारे।
राख और फूल तेरे पे, बहरी हुई दुनिया पाखण्डी॥
तने देख दिल....

योगेन्द्र मवीकला धाम रहे सै, समाज सेवा नित ध्यान रहे सै।
जल बिरादरी परेशान रहे सै, कद आवे आखा नन्दी॥
तने देख दिल घायल ...

सुनो गाँव के लोगो

योगेन्द्र वैदिक एवं आर्यवीर, मवीकलां

सुनो गाँव के लोगो, सब दूषित हुई फिजायें।
हम तुम सब मिल-जुलकर हिंडन को स्वच्छ बनायें॥

ये हिंडन अपनी माँ है, हो गयी कितनी मैली।
नित फेंक रहे हैं, इसमे प्रदूषण की थैली॥
सुनो पुकार माँ की, ये सिसक-सिसक रोती है।
इस जल की महिमा को जानो, ये जीवन ज्योति है॥

अगली पीढ़ी मोती है, मोती की चमक बचाये।
सोचो, इन बच्चों को हम क्या देकर जायेंगे॥
ये दूषित पानी से दूषित जीवन पायेंगे।
क्या ये जल में नहा पायेंगे, इसे नहाने योग्य बनायेंगे॥

कोई काम नहीं है मुश्किल, अगर किया इरादा पक्का।
अगर राष्ट्र एकता हो जाये तो लग जायेगा हक्का॥
योगेन्द्र वैदिक अपने हक का क्यों ना ध्यान उठाये।
इसमें ही तो ममता खेली, दामन को साफ बनाये॥

हिंडन की पीड़ा

जयपाल यादव, धूमी, मोहम्मदपुर

आओ, माँ की व्यथा सुनायें। इसके दुःख की कथा सुनायें॥
हिंडन नहीं ये हरनन्दी है। शिव और नन्दी की सन्धि है॥
फिर भी क्यों इतनी गन्दी है। हम सब मिलकर पता लगायें॥
नदियां तो माता होती हैं। पाप हमारे ये धोती हैं॥
मैली होने पर रोती हैं। इनका आँचल स्वच्छ बनायें॥
हम इसकी रेती में खेले। इस पर लगते देखे मेले॥
इसने बहुत आक्रमण झेले। कहाँ तक इसकी गाथा गायें॥
बचपन में हम भी नहाते थे। मेलों में साधु आते थे॥
इसका जल लेकर जाते थे। कीचड़ कोई क्यों ले जाये॥
पाँच तीर्थ हैं इसके तीर। साधु -सन्तों की जागीर॥
ऋषि, मुनि, सन्यासी, वीर/सब मिलकर के राह दिखायें॥
बरनावे में लाक्षागृह पर/पूरेश्वर में महादेव पर॥
बाल्मिकी में पंचमुखी पर/क्या ऐसे जल का अर्घ्य चढ़ाएं॥
खेती को इसने सींचा था। हरियाली को तब खींचा था॥
जल स्तर भी कम नीचा था। कैसे इसको ऊपर लायें॥

यदि रहा ऐसा ही आलम। तो एक दिन देखोगे मातम।।
गाय-भैंस के मरने का गम। ना जाने कहाँ किसे सताये।।
भविष्य में जहर इस जल में होगा। फिर घर के नल में होगा।।
छेद नदी के तल में होगा। तब हम सब कैसे बच पायेंगे।।
और ये शमशान कहा जायेंगे। मुक्ति क्या मल से पायेंगे।।
अर्थी वाले कहां नहायेंगे। सोचो और कुछ करो उपाय।।
भारत है नदियों की धरती। ये प्राणियों में जीवन भरती।।
भर जाने पर मुक्ति करती। मिलकर सारे शीश झुकायें।।
तप से तट पर तर्पण करते। शिव विष्णु को अर्पण करते।।
गोद में इनकी समर्पण करते। पर अब कोई कैसे आये।।
अब तो जल इतना गन्दा है। जीव नहीं इसमें जिन्दा है।।
चमड़े और मल का धन्धा है। कोई ना इसको हाथ लगाये।।
कभी शिवालिक से बहती थी। सब दु:ख सुख को सहती थी।।
कथा किसानों की कहती थी। अब बेचारी क्या उपजाए।।
नेता-अफसर पेट के काले। बेच रहे है नदियां-नाले।।
इन्हें किया सेठों के हवाले। चलो इन्हें कुछ राह दिखाएं।।
पहले तो पदयात्रा कर लो। अमन शान्ति के पग धर लो।।
भोले भाव से आहें भर लो, शायद शासन शरमा जाए।।
वरना तो फिर बात करेंगे। इनसे दो-दो हाथ करेंगे।।
रक्षा भोलेनाथ करेंगे। और ले त्रिशूल उठाये।।
जलपुरुष राजेन्द्र भैया। तुम्हें पुकारे हिंडन मैया।।
वरुण देवता नाव खिवैया। विषय पताका दे फहराय।।
हिंडन की तुम कर दो शुद्धि। प्रभु दे दो सबको सद्बुद्धि।।
संग सकल समृद्धि आए। लौट कभी ना वापस जाय।।
जल-जीवन अधिकार हमारा। जल नीरा हो माँ की धारा।।
निर्विकार है लक्ष्य हमारा। न्यायालय ने दिया बताय।।
इसलिए जागो, उठो जवानो। अपनी ताकत को पहचानो।।
जयपाल यादव तुम्हें बुलाये। प्रदूषण मुक्ति की अलख जगाए।।

6. हिंडन के अनुभव

रमेश शर्मा

(लेखक गाँधी युवा बिरादरी, नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं। जन आन्दोलनों को गति देने वाली उत्प्रेरक शक्ति के रूप में इन्हें ख्याति प्राप्त है।)

22 नवम्बर, 2004 की सुबह सचमुच शुभ थी। देवउठनी ग्यारस को जागृत देव शक्तियाँ जैसे सचमुच अपना वरदहस्त ले मौके पर विद्यमान थीं। न भोजन की चिंता और न वाहन की। ठीक प्रात: आठ बजे मोहन नगर के निकट श्मशान घाट पर 'मृत्यु से जीवन' का सफर शुरू हुआ। गायत्री शक्तिपीठ में ओंकार वंदना के बीच स्वयं

आकर एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद के पूर्व प्राचार्य ने हिंडन प्रदूषण के वैज्ञानिक अध्ययन की जिम्मेदारी संभाल ली। सेवानिवृत्त पुलिस उपाधीक्षक डॉ. एस.डी. शर्मा ने पूरी भागीदारी का वायदा किया। हमें जैसे मुँहमाँगी मुराद मिली। स्थानीय कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त राजस्थान-दिल्ली-उत्तर प्रदेश से आए राजेन्द्र भाई, राजा गोपाल सिंह, अरविन्द कुशवाह और अरुण तिवारी आदि कर्मठों ने अपनी-अपनी कमान संभाल ली। थोड़ी चर्चा हुई। प्रशासन ने भी उसी दौरान हिंडन में गंगनहर का थोड़ा पानी छोड़ अपनी शर्म दिखाई । यात्रा का संकल्प और मजबूत हुआ तो संचालन की जिम्मेदारी मेरे कंधों पर आ गई। बस! फिर क्या था, गाजियाबाद के मुख्य मार्ग पर ''जागो! वीरो, राष्ट्र जगाओ। हरनन्दी को शुद्ध बनाओ।'' का नारा गूंज उठा।

शहर जगाने से पहले गांवों को जगाना था; अत: यात्रा पहले सेवा ग्राम... फिर नंदग्राम की ओर मुड़ गई। यात्रा मार्ग पहले से तय था। कच्ची-पक्की सड़कों पर चूने से बना तीर आगे-आगे मार्गदर्शन कर रहा था। एक बहन ने सवाल दागा ''अब कौन के वोट पड़ेंगे? बैनर देखकर उनमें से एक पढ़ी-लिखी ने ही जवाब दिया ''ये हिंडन वाले हैं।'' लगा कि इस इलाके में सिर्फ वोट के लिए ही रैलियां होती हैं। मैंने आगे बढ़कर पर्चा थमाया - ''अरे जीजी! हिंडन पहले आपकी है... फिर किसी और की।''... यूं ही पर्चे बाँटते, चिपकाते और जन-जन से संवाद करते यात्रा सिंहानी और मोरटी से होती हुई कब गांव-अटोर पहुंच गई... पता ही नहीं चला। यहां गांव के मानिंद जिम्मेदार बुजुर्गो को इंतजार करते पाया। मैंने याद दिलाया, हमारे यहां कैसे भर परात पानी में बच्चों को नहलाने और फिर उसी में उसके कपड़े धोने के पश्चात् शेष पानी को पेड़-पौधों में डाल देने की परंपरा थी। दरअसल जल संरक्षण हमारी परम्परा ही नहीं, जीवन शैली भी है।

राजेन्द्र भाई ने सच कहा- ''हम तो जानने आए हैं... गांव और हरनन्दी के रिश्तों को।'' श्री तेजराम जी ने भूले दिनों को याद करते हुए कहा- ''पहले हिंडन में सिक्का डालो तो साफ चमकता था। हम नदी में ही नहाते थे। शादी ब्याह उत्सव में हिंडन किनारे... हिंडन के पानी में ही भोजन पकाते थे। अब तो नदी में पांव तक नहीं रखते। श्री वेदराम का कहना था कि जब से नदी प्रदूषित हुई, मछलियां नजर नहीं आतीं।

चौ. हरचंद नदी के बदले स्वास्थ्य के साथ-साथ इलाके में मच्छरों की भरमार को कोसते हैं।

भाई जयपाल को वह घटना याद हो आई, जब गाय को नदी से बाहर लाने गए चार लोगों में गलन की सी बीमारी लग गई थी। श्री जयपाल ने अपील की कि यदि सरकार बहरी और अंधी हो तो संगठन जरूरी है। बात सही भी है।

राजा गोपाल सिंह ने उचित अवसर जान हिंडन किनारे के ग्राम प्रतिनिधियों की 'हिंडन संसद' के गठन का प्रस्ताव पेश कर दिया। श्री राजबीर ने चुनौती दी ''आखिर किसी को तो गाँधी बनना होगा।'' शायद वह राजेन्द्र भाई में गांधी की ही छवि देख रहे थे। फिर क्या था... हिंडन के बेटे जुड़ने लगे। ऐसे में आराम कहाँ? तनिक जलपान के कुछ मिनट बाद ही सभी यात्री गांव नंगला के पूर्व प्रधान श्री रामपाल सिंह की देहरी पर थे। अफसोस! नंगला में एक मृत्यु ने ग्रामवासियों को अन्यत्र व्यस्त कर दिया था। नंगला में पुनः संपर्क के वायदे और ग्राम प्रतिनिधि सभा के शीघ्र गठन के आश्वासन के साथ यात्री आगे बढ़े। अटोरवासी गांव के मुहाने तक छोड़ने आए और दिखाया कि कैसे गांव को गाजियाबाद शहर से सीधे जोड़ने वाले पुल की मांग मनवाने के लिए उन्होंने सोनिया विहार जल संयंत्र की पाइप लाइन नहीं लगने दी थी। हिंडन के काले चित्र लेने का मन नहीं हुआ, किंतु नया पुल गांव के संगठन की विजयगाथा कह रहा था, सो कुछ चित्र लिए।

गांव करवट लेंगे। यह उम्मीद कच्चे धूल भरे रास्तों पर भी हमें गतिवान बनाए हुए थी। अजीब उत्साह था। गांव-भूपखेड़ी के नौजवान ग्राम प्रधान रोहतास भाई ने बड़े आत्मविश्वास के साथ गांव से हर सहयोग की बात पक्की की। अपने ही तट को काटकर हर साल गांव की सरहद के करीब आती नदी की चेतावनी को काफी पहले समझ भूपखेड़ी की पंचायत उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री को कई बार लिख चुकी है। भूपखेड़ीवासी पहले जान चुके थे कि हिंडन के गुस्से को शांत नहीं किया तो आज नहीं तो कल, गांव को अपना ठिकाना बदलना ही होगा; किंतु क्या बाप-दादा के बसेरे को छोड़ना इतना आसान है? जवाब ग्रामवासी जानते हैं सो श्री रोहतास प्रधान की

अगुवाई में ग्राम प्रतिनिधि सभा गठित कर ली गई। आसमान में भले ही तब सूरज छिपने जा रहा था, पर हम हर गांव में नया सूरज उगाने को बेताब थे। अत: यात्रा का एक दल राजा गोपालसिंह के नेतृत्व में ग्राम सिरोरा गया और राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में दूसरा दल गढ़ी के लिए रवाना हो गया।

यहां तीन बजे का समय तय था; यात्रा दल को पहुंचते-पहुंचते छह-साढ़े बज गए थे। बावजूद इसके डौला गांव के लड़कपन से अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के शिखर पर पहुँचे राजेन्द्र सिंह की अगवानी को फूल मालाएं लिए गढ़ीवासी सड़क पर ही मिले। राजेन्द्र भाई के शब्दों ने यहां अंधेरे में रोशनी का काम किया। हिंडन के पानी से पशुओं तक को जो परहेज हुआ... प्रधान श्री रामपाल ने यह बात यूं तो थोड़े शब्दों में बताई, लेकिन गांव सिरोरा, गढ़ी और भूपखेड़ी के संयुक्त संगठन का बड़ा बखान हम पहले ही सुन आए थे।

गांव भूपखेड़ी की तरह गढ़ी और सिरोरा में भी हिंडन के कष्ट बहुत है। कहीं पानी खुजली करता है, तो कहीं इंडिया मार्का हैंडपम्प भी बीमार पानी ही पिला रहा है। सिरोरा के पूर्व प्रधान मास्टर धर्मपाल का कंधे से कंधा मिलाने और आंदोलन को आगे ले जाने का निश्चय कह रहा था कि आसमां में ही नहीं, धरती पर भी कुछ सूरज, चाँद और सितारे हैं। अत: हिंडन संसद की ग्राम प्रतिनिधि सभा बनाने में तीनों ही जगह ज्यादा वक्त नहीं लगा, लेकिन चर्चा खूब लंबी हुई।

गांव गढ़ी पहुँचे, तो अपने पर नदी के कर्ज का जिक्र करते हुए राजेन्द्र सिंह भावुक तो हुए, लेकिन गांव का निश्चय दृढ़ कर गए। भाई अरुण तिवारी ने हिंडन जल प्रदूषण रोकने के लिए साझा मंच बनाने पर जोर दिया। कहा कि संगठित प्रयास ही सफलता की आसान राह है। श्री रामपाल सिंह अपने सेवाभाव और समभाव के कारण ही यहां के प्रधान हैं। अत: यात्रा का पहला रात्रि पड़ाव यहीं होना तय हुआ। सुंदर भोजन और विश्राम व्यवस्था के बीच आपसी संवाद और योगेन्द्र वैदिक, आर्यवीर आदि की रागिनी देर रात तक जागरण कराती रही। अगले दिन 23 नवम्बर को सुबह का सूरज उगते-उगते जब इसी गांव के रहने वाले इंजीनियर पुत्र रोहित कुमार यादव यात्रियों से

मिलने दिल्ली से चले आए तो विश्वास पक्का हुआ कि गढ़ी कलन्जरी सचमुच एक मजबूत गढ़ साबित होगा।

रोहित एन.एच.पी.सी. में नौकरी करते हैं। एन.एच.पी.सी. के दो वरिष्ठ अधिकारियों का दो-चार दिनों पहले ही बिहार में अपहरण हुआ था। अत: रोहित की चिंता और व्यस्तता दोनों ही अधिक थी। मात्र चार घंटे के लिए रोहित का आना बता गया कि नदी को लेकर रोहित के मन में क्या चल रहा है।

स्कूलों में बच्चों से संपर्क इस अभियान का सबसे अहम् हिस्सा था। मैं, अरुण तिवारी, राजा गोपाल सिंह और कृष्णपाल सिंह ने आदर्श हायर सेकण्डरी स्कूल (गढ़ी कलन्जरी) में छात्रों की जिज्ञासा जगाने का काम किया। अध्यापकों के मन में भी कुछ संकल्प खड़े करने की कोशिश की। छात्रों ने काफी रुचि दिखायी। इस अभियान का यह पहला स्कूल था। स्कूलों में संवाद कायम करना अच्छा रहा। इस बारे में हमने आगे के पन्नों में अलग से लिखा है। आगे का कार्यक्रम पहले से तय था। गढ़ी कलन्जरी से ही यात्रा तीन हिस्सों में बंट गई। नाश्ता बनाने वाले साथी फुलेरा रवाना हो गए। दूसरा समूह नवादा चला गया। तीसरे समूह में हम थे। हमें स्कूल से निवृत्त होकर दूसरे समूह में मिलना था।

नवादा वाले मंदिर के महंत स्वयं चैतन्यमना हैं। यात्रा की भावना और उद्देश्य को समझ कर ही उन्होंने गांव को आगाह किया ''अब इधर-उधर भटकना छोड़ एकजुट हो हमें आंदोलन के साथ हो जाना है। यह आंदोलन सिर्फ हिंडन के ही नहीं... गांव के भी सभी कष्ट मिटाने आया है।''

महाराज जी ने चेताया कि जहरयुक्त पानी शरीर की रासायनिकी बदल देता है। डी.डी.टी. पाउडर का छिड़काव दुनियाभर में प्रतिबंधित है, किंतु हमारे जानवरों के दूध में इनके अंश मिलना आम है। हम यह क्या कर रहे हैं? किस अंधी दौड़ में शामिल हैं हम सब ? यह दौड़ हमें कहां ले जायेगी ? राजेन्द्र भाई ने बड़े पते की बात कही- ''आगे जाना अच्छा है, पर जो पीछे छूटा, उसमें से जो अच्छा है; उसे त्यागना बुरा

है। उसे पकड़ो। वह समय की कसौटी पर जाँचा-परखा है। वह आज का भी सर्वश्रेष्ठ हो सकता है। हमने राजस्थान में पारंपरिक जल संरचनाओं को उभारा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उसे 'जल संरक्षण का सर्वश्रेष्ठ तरीका' कहा। अत: हमें अपनी परंपराओं को पिछड़ा कहने की बजाय उनसे सीखना शुरू करना चाहिए।'' उन्होंने दुनिया भर में हो रहे पानी के बाजारीकरण और भारत के प्राकृतिक संसाधनों पर लगी विदेशी निगाहों के प्रति भी आगाह किया; कहा कि हमारी परंपरायें ही हमें बचा सकती हैं।

वाकई यह सच है। यही सब जगह का निदान है; असम का भी, उ.प्र. का भी और लंदन तथा अमेरिका का भी। गांव ने यहां इसे समझा। श्री एम.एल. शर्मा ने नवादा में शीघ्र समिति के गठन की सिर्फ जिम्मेदारी ही नहीं ली, बल्कि यह भी कहा ''बस! अब बहुत हो चुका। अब हम और जहर नहीं पियेंगे। हाय! दूध सी निर्मल हरनन्दी का प्रदूषकों ने कैसा सत्यानाश किया है। अब हम उन्हें और स्वीकार नहीं करेंगे।''

श्री लटूर सिंह ने बताया कि स्थानीय नवोदय विद्यालय के बच्चे जहरीला पानी पीने को विवश हैं। भू-जल पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है। इस बारे में अखबार में भी छपा था। प्रधान दिग्विजय सिंह ने पूछा -''भाई पहले आते तो बागपत के प्रसिद्ध बोतल खरबूजे से आपका स्वागत करते। पर क्या करें... अब वैसा मीठा खरबूजा होता ही नहीं। है कोई जो बागपत के खरबूजे की मिठास हमें लौटा सके?

नवादा ही नहीं, फुलेरा भी पानी के प्रदूषण से त्रस्त है। प्रधान श्री चमनलाल यादव दु:खी हैं कि उनका बचपन तो हिंडन में नहाते हुए बीता; परन्तु वर्तमान नई पीढ़ी के लिए तो यह सब किस्सों में ही बचा है। अब तो नदी पार करते वक्त भी नाक पर कपड़ा रखना पड़ता है। वह मानते हैं... दोषी तो हम ही हैं। इस पीढ़ी ने तो नदी का पानी काला ही देखा। हिंडन के पानी को स्वच्छ निर्मल बनाकर नई पीढ़ी को सौंपने की जिम्मेदारी हमारी है। हिंडन की पवित्रता और बड़प्पन का अहसास अभी यहां के लोगों में पूरी तरह मरा नहीं है। यात्रा सर्फाबाद पहुंची, तो श्रीमान् धर्मवीर को परदादी की सुनाई कहानी याद आ गई :

''हिंडन को पहले हरनन्दी कहते थे। तब आखा तीज पर हरनन्दी किनारे विशाल मेला लगता था। यह बहुत ही पवित्र मौका होता था। गंगा नदी पूरे बरस इस मौके का इंतजार करती थी। आखा तीज पर गंगा... हरनन्दी में स्नान के लिए आती थी। हरनन्दी में स्नान कर गंगा अपनी पापहारिणी शक्ति को पुनः प्राप्त कर लेती थी।''

यह लोककथा यूं तो साधारण है, लेकिन हरनन्दी की असाधारण शुद्धता की ओर स्पष्ट संकेत है। भगत धूमसिंह, ग्राम ललियाना ने तो वर्तमान स्थिति की तुलना भगवान कृष्ण द्वारा कालियादह का मर्दन कर नदी यमुना को मुक्त कराने की कथा से कर डाली। उन्होंने कहा- 'राजेन्द्र भाई अवतारी पुरुष हैं। उनके साथ मिलकर हमें हिंडन को प्रदूषण मुक्त करने का मौका खोना नहीं चाहिए।'

महन्त श्री लक्ष्यदेवानन्द जी ही नहीं, गांव सुराना की एक बुजुर्ग मां भी हिंडन का धार्मिक चेहरा नष्ट हो जाने से चिंतित है। कहती है कि शादी-ब्याह, तीज-त्यौहार, पूजा-व्रत में हिंडन जल को हम गंगा जल से भी श्रेष्ठ मान उपयोग में लाते थे; अब तो देखने से ही उबकाई आती है। धर्म बचे तो बचे कैसे? मवीकलां के ग्राम प्रधान भाई रणवीर सिंह अच्छी तरह जानते हैं कि इनके गांवों की जिंदगी हिंडन के जल में बसी है। अब... जब हिंडन का जल ही मल सरीखा हो गया... तो गांवों के जीवन को नरक होने में क्या देर लगेगी?

गांव के पास स्थित किनोनी मिल नदी को और प्रदूषित कर रही है। यात्रा ने यहां कुछ अहसास जगाए हैं। राजेन्द्र सिंह को सामने पा अभिभूत हुए एक ग्रामीण ने हिंडन प्रदूषण मुक्ति अभियान के लिए जब अपना एक बेटा दान करने की बात कही, तो मुझे एक पल अपने बौनेपन का अहसास हुआ। सचमुच! त्याग इंसान को कितना बड़ा बना देता है। पूर्वी उ.प्र. जल बिरादरी के अध्यक्ष भाई अरविंद कुशवाह भी मन के राजा आदमी हैं। कानपुर में अपने सारे काम-काज त्याग कर पांचों दिन हमारी पैदल यात्रा में साथ रहे। उन्होंने सवाल किया ''आज मिलावट सिर्फ हमारे खाने-पीने के सामान या पानी में ही नहीं है; कुछ पैसे वाले लोग पूरे परिवेश को ही मिलावटी और दिखावटी बनाने में जुटे हुए हैं। ऐसे में क्या हमारा फर्ज नहीं कि हम चांदी की चमक वालों को अपने संगठन और अपने हिंडन प्रेम की चमक सुना सकें।''

मुकारी गांव के सुधीर कुमार कहते रहे कि अभी गांव में सबका हाजमा बिगड़ा रहता है। एक दिन ऐसा आएगा जब दवा भी बेकार हो जाएगी; तब यहाँ से भागने के सिवाय कोई और चारा नहीं बचेगा। तब क्या होगा? मुल्लन सिंह फौजी का फौजी मिजाज भी बैठकों में जोर मारता रहा। मुल्लन का गुस्सा उफान पर था... ''और किसी को दोष क्यों दें, हमारी खुद की मानसिकता कायरों और गुलामों जैसी हो गई है। हम सब कुछ नकारात्मक दृष्टि से देखने लगे हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण गायब हो गया है। कमी हम में ही है। हमें संगठित होना होगा और हिंडन के प्रदूषकों से ठीक वैसे ही लड़ना होगा, जैसे सैनिक सीमा पर दुश्मनों से लड़ते हैं। वैसा जज्बा मन में लाए बगैर लड़ाई जीतना असम्भव है।''

बालैनी के पूर्व प्रधान जयलखन यादव व मनोज यादव की राय थी कि यह आंदोलन अकेले नहीं लड़ा जा सकता। जनप्रतिनिधि और अधिकरियों को भी इससे जोड़ा जाना चाहिए। हरियाखेड़ा के मास्टर पद्मसिंह यादव का जोर भी संगठन पर ही था और लोतीराम का भी। लोतीराम ने कहा कि पहले के संगठन में 'एक पाई - एक भाई' का अनिवार्य नियम था। जिसकी एक पाई लगती थी, वह भाई अपनी पाई की कीमत जानता था। तभी संगठन चलता था। इस आंदोलन से पहले मुक्ति अभियान के सदस्यों की राय थी कि इस इलाके का मानस कुछ भिन्न है। हिंडन प्रदूषण के लिए

लोगों को जोड़ना मुश्किल होगा। किंतु बतौर संचालक मैंने यह अनुभव किया कि यात्रा के प्रथम चरण का लाक्षागृह में समापन होते-होते हिंडन प्रदूषण मुक्ति अभियान अब राष्ट्रीय जल बिरादरी का नहीं रहा; अब यह अभियान गांवों का हो गया। गांवों ने ही यात्रियों के रहने-खाने, वाहन की व्यवस्था की। जहां कहीं जैसी जरूरत हुई... गांव ने वैसी मदद की। सिर्फ इतना ही नहीं, गांवों ने आगे बढ़कर मुक्ति अभियान की योजना, प्रबंधन और बाकी सभी दायित्व संभाल लिए। गांवों ने ही तय किया कि नदी के दूसरे किनारे के गांवों को भी अभियान से जोड़ा जाए। इसके लिए यात्रा का दूसरा चरण आयोजित करना तय हुआ।

यात्रा के प्रथम चरण की उपलब्धियां कम नहीं रहीं। यात्रा के दौरान कई गांवों में हिंडन ससंद की ग्राम प्रतिनिधि सभाओं का गठन हुआ। हजारों लोग हिंडन प्रदूषण मुक्ति को संकल्पित हुए। छात्रों में नदी से जुड़ने के संस्कार बनाने में कामयाबी मिली। हिंडन के चरित्र, गुणों, लोगों से उसके जुड़ाव तथा इतिहास और प्रदूषण के कारण व कारकों की पहचान करने में मदद मिली। यह एक अच्छा अनुभव था। एक बार फिर इस कथन की सत्यता साबित हुई कि जहाँ समाज जग जाता है, वहां सारी विषमताएं, सारे कष्ट और सारी बुरी आदतें स्वत: समाप्त हो जाती हैं।

सिरोरा : अध्यक्ष–श्री प्रीतम सिंह
प्रारम्भिक सदस्यों की सूची तैयार कर सूचित करने का आश्वासन दिया।

गढ़ी : अध्यक्ष–श्री रामपाल सिंह
प्रारम्भिक सदस्य-सर्वश्री विष्णुदत्त शर्मा, चंद्रपाल यादव, रतिराम कसाना, विक्रम सिंह।

पूरनपुर नवादा: श्री एम.एल. शर्मा ने इकाई निर्माण की जिम्मेदारी ली।

ललियाना अध्यक्ष–मास्टर वेद सिंह
प्रारम्भिक सदस्य-सर्वश्री नरेश, पवन, महावीर, कप्तान सिंह, सतवीर, ज्ञानेन्द्र सिंह, इलियास और आदेश कुमार।

चमरावल : अध्यक्ष– प्रधान श्री दिग्विजय सिंह
प्रारम्भिक सदस्य-सर्वश्री विनोद त्यागी, मास्टर बालकराम, श्यामलाल, मनोज त्यागी, छिछामल, राजकुमार त्यागी, शिवराज सिंह तथा राजेश्वर दयाल त्यागी।

घटोली : प्रारम्भिक सदस्य-सर्वश्री कृष्णदत्त त्यागी, प्रधान तारा सिंह, इलियास, ब्रह्मदत्त, काशीराम, रामेन्द्र, चन्द्रकिरण, शंकर और महावीर।

डौलचा : प्रारम्भिक सदस्य-सर्वश्री तेजवीर सिंह, लाला, अमन, बिजेन्द्र, राजपाल और रोहित।

बालैनी : प्रधान श्री मनोज यादव, लोती यादव, ऋषिकेश, पूर्व प्रधान जयभगवान यादव, भोलू शर्मा, कबूल तेली, खजान यादव, धर्मपाल यादव तथा इब्राहीम ने इकाई गठन के प्रति आश्वस्त किया।

मवीखुर्द : ग्राम प्रधान श्री कृष्णपाल, ईलम सिंह, चौ. निसार, लोकेश, मांगेराम, हरेन्द्र सिंह और शकील ने समिति गठन के प्रति आश्वस्त किया।

मवीकलां : अध्यक्ष–श्री योगेन्द्र वैदिक। इकाई के सदस्यों की सूची को अंतिम रूप देकर शीघ्र सूचित करने का भरोसा मिला।

9. हिंडन की पाठशालाएँ

ईश्वर चंद कौशिक

(प्राचार्य, हायर सेकण्डरी स्कूल, पावला, बागपत, उ.प्र.)

एक आम राय है कि स्कूली छात्रों को सामाजिक-प्राकृतिक सरोकारों के प्रति साक्षर करने से तीन पीढ़ियाँ स्वतः साक्षर हो जाती हैं; एक वह स्वयं, दूसरा उसके माता-पिता और तीसरा उसकी संतान। हम जानते हैं कि बच्चे स्वभाव से ही जिज्ञासु होते हैं। इनके मन में ढेरों सवाल कुलबुलाते रहते हैं। आप जवाब देने को तैयार हों, तो बच्चे सवालों की झड़ी लगा देते हैं। अपनी किताबी पढ़ाई से अलग मिला ज्ञान इन्हें

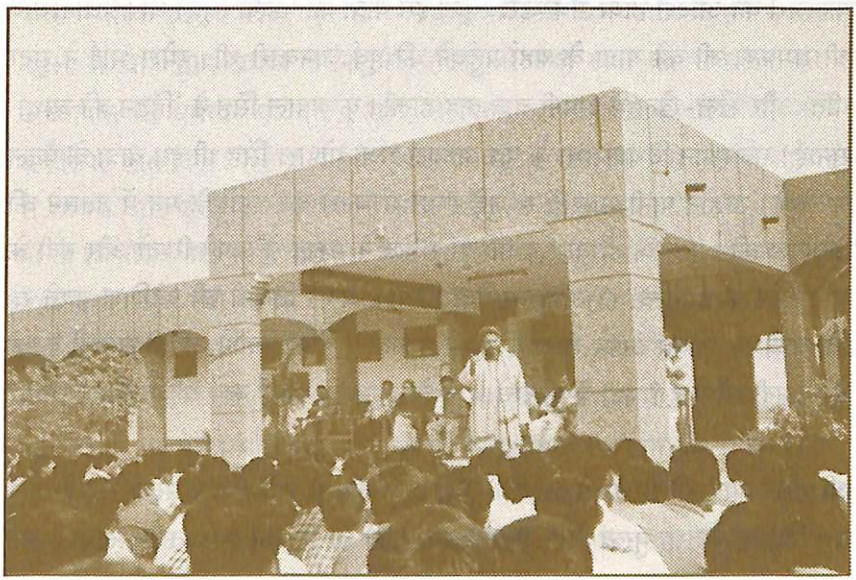

अधिक आनन्दित करता है। ऐसी बातों को ये न सिर्फ खुश होकर सुनते हैं, बल्कि घर जाकर अपने अभिभावकों, संगी-साथियों से उन पर सवाल भी करते हैं। इससे अभिभावक भी पुनःचिंतन की मुद्रा में आने को मजबूर होते हैं। वे भी ऐसी बातों को सोचना शुरू कर देते हैं, क्योंकि उनका अपना बच्चा उस बात की 'सही-गलत' की जानकारी चाहता है। इतना ही नहीं, माँ-बाप या बड़े भाई-बहन ने यदि किसी बात को एक बार गलत बता दिया... जैसे – 'हाँ, खेतों में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से हिंडन को नुकसान पहुंच रहा है।'... तो बस! समझिए कि कभी कीटनाशक और रासायनिक उर्वरक का आप उपयोग करते पाए गए, तो बच्चा टोकेगा जरूर। तीसरा एक साक्षर छात्र जब कल को पिता बनेगा, तो सामाजिक सरोकारों के प्रति वह अपनी संतान को स्वतः साक्षर कर देगा।

संभवतः हिंडन यात्रा का संचालन दायित्व संभालते समय श्री रमेश शर्मा जी ने जब स्कूलों को विशेष लक्ष्य की रणनीति तय की थी, तब उनके मन में उक्त अवधारणा रही होगी। अच्छा ही हुआ कि हम छात्रों से मिले और गुरुओं को जाना।

हिंडन यात्रा के प्रथम चरण में कुल दस स्कूलों में सीधे संवाद का सौभाग्य मिला। गढ़ी कलंजरी का आदर्श हायर सेकण्डरी स्कूल इस यात्रा का पहला स्कूल था। प्रधानाचार्य श्री रामफल जी को यात्रा के यहां पहुंचने की पूर्व जानकारी थी। रमेश भाई ने सुंदर गीतों और खेल-खेल में अपनी बात कह डाली। कृष्णपाल सिंह ने 'हिंडन की व्यथा' सुनाई। राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष राजा गोपाल सिंह भी इस यात्रा के पैदल यात्री थे। उन्होंने पानी, प्रकृति से जुड़े हमारे संस्कारों को छात्रों के मन में उतारने की कोशिश की। गांव के ही युवा इंजीनियर रोहित ने स्कूल से अपने रिश्तों और नदी के प्रति गांव के दायित्व का अहसास पैदा किया। अरुण तिवारी जी कोशिश करते रहे कि बच्चे घर जाकर अपने माता-पिता से सवाल करें कि उन्होंने अपनी संतानों को ये कैसी नदी सौंपी है ? नदी में कुलाचें भरने के आनन्द से उन्हें क्यों वंचित किया गया ?

श्री रमेश भाई की प्रेरणा से छात्रों ने प्रतीक के रूप में नदी में एक साथ सैकड़ों दीप प्रवाहित करने तथा मुख्य मंत्री, उ.प्र. सरकार को पत्र लिखने का संकल्प लिया। छात्र

लिखेंगे – ''माननीय मुख्य मंत्री जी ! हिंडन हमारी है। हिंडन में स्नान करने का..... उसका अमृतपान करने का..... हमारा अधिकार हमें वापस चाहिए।''

नेहरू स्मारक इंटर कॉलेज, फुलेरा के प्रधानाचार्य श्री विजयपाल के मन में संकल्प पहले से था। ग्राम प्रधान चमनलाल यादव जी तथा सभा का संचालन कर रहे अध्यापक श्री धर्मवीर यादव ... सभी जलपुरुष राजेन्द्र सिंह की बातों से अधिक संकल्पित होते दिखे। राजेन्द्र भाई ने एक सपना सामने रखा कि कैसे नदी के साफ होने से समाज और पीढ़ी का भविष्य भी साफ और स्वच्छ बनता है।.... कैसे नदी गंदी हो तो हम तैरना नहीं सीख पाते।... कैसे यदि हम आज नहीं चेते, तो कल नदी हमारी नहीं होगी। अब नदी का बाजार खुल गया है। हम यदि नदी को साफ नहीं रख सके, तो हिंडन पहले तो साफ करने के नाम पर बाजारू शक्तियों को सौंप दी जायेगी... और फिर बाद में रख-रखाव और बेहतरी के नाम पर बिक ही जायेगी। तब नदी ही नहीं, नदी किनारे का पानी भी किसी निजी कंपनी से खरीद कर उपयोग किया जा सकेगा। तब क्या होगा ? सिर्फ इतना ही नहीं, अब तो गंगा का पानी भी गंग नगर के जरिए दिल्ली को बेचा जाएगा। दिल्ली के पैसे वाले तो शौच भी गंगाजल में ही धोएंगे, पर

पश्चिमी उ.प्र. के खेतों को सींचने का पानी सूख जाएगा। तब हिंडन ही एकमात्र सहारा होगी। उसे हमने बिल्कुल ही मार दिया तो हम भी मरेंगे।

सर्फाबाद के जवाहर नवोदय विद्यालय के छात्र व अध्यापक बीमार पानी से पैदा बीमारी के प्रकोप से तो परिचित थे, लेकिन हिंडन पर होते अत्याचार से नहीं। बावजूद इस सबके अच्छा लगा कि श्री विनोद त्यागी, सुशील त्यागी, प्रधानाचार्य श्रीमती आर.आर. त्रिपाठी व अन्य सिर्फ राजेन्द्र सिंह जी से वृक्षारोपण करवाकर ही संतुष्ट नहीं हुए, उन्होंने हिंडन प्रदूषण के विरुद्ध अभियान में भागीदारी की भी प्रबल इच्छा जताई। प्राथमिक पाठशाला सिंघोली तगा के नन्हे-मुन्नों का मन तो रमेश भाई के 'पढ़ते-पढ़ते हंसना सीखो और हंसते-हंसते पढ़ना' में रम गया।

रमेश भाई बच्चों को अपना बना लेने में माहिर हैं। कहीं प्रश्नोत्तरी, कहीं गीत, कहीं कविता, कहीं खेल और कहीं नारे। सरस्वती शिशु मंदिर (चमरावल), सरस्वती शिशु मंदिर (पुरा महादेव), पुरेश्वर महादेव बालिका हायर सेकण्डरी स्कूल (पुरा महादेव) और प्राथमिक पाठशाला, गलहैता के स्कूलों में रमेश भाई ने हिंडन की चिंता और हमारे कर्तव्यों को सहज ही छात्र-मणिकाओं में पिरो दिया।

जलपुरुष राजेन्द्र बागपत के गांव डौला के ही हैं। अतः बागपत की धरती उन्हें पा खुश होती है। राजेन्द्र सिंह से पहले उनकी ख्याति देव इंटर कॉलेज, डौलचा के प्रधानाचार्य श्री तेजबीर सिंह, प्रबंधक श्री राजपाल व ग्राम प्रधान तेजवीर तथा महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बरनावा के आचार्य विजय त्यागी तथा अन्य साथी अध्यापकों तक पहुंच चुकी थी। मिलन के मौकों पर धरती के आत्मगौरव और अपनेपन का भाव जोर मारता रहा। राजेन्द्र सिंह अपनी जन्मभूमि का कर्ज उतारने को व्यथित दिखे, तो जननी संतान मिलन से अभिभूत। हिंडन पर योगेंद्र वैदिक तथा आर्यवीर की रागिनियों और मास्टर जयपाल की कविता (हिंडन की पीड़ा) ने हिंडन के प्रति हमारे दायित्व निर्वाह पर सवाल खड़े करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सवाल तो खड़े हो गए पर जवाब तैयार कर लाने का 'होमवर्क' हमारे छात्र कब पूरा करेंगे? अभी यह देखना बाकी है।

10. हिंडन का इलाज

डॉ. सत्यदेव शर्मा

(महासचिव, समीक्षा (सामाजिक स्वैच्छिक संस्थान), गाजियाबाद, उ.प्र.)

हिंडन प्रदूषण मुक्ति पदयात्रा का पहला चरण अपने मकसद में कामयाब रहा। हिंडन, उसकी देह, आत्मा और सत्यानाश को समझने में मदद मिली। लोगों के मन में कुछ सवाल उठे तो कुछ अच्छी यादें भी ताजा हुईं। पता लगा कि हिंडन क्यों बीमार है और उसे बीमार बनाने वाले विषाणु कौन से हैं ?.... बीमार हिंडन का इलाज क्या है ?.... उसे कैसे लागू किया जाए ? कौन लोग उसके डाक्टर हो सकते हैं ? इन सब सवालों पर अभी काम जारी है।

पहली पदयात्रा के तुरन्त बाद गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली और कार्टे संस्थान, शास्त्री नगर, गाजियाबाद में इस बाबत बैठकें भी हुईं। प्रो. राशिद हयात सिद्दकी, (पूर्व उपकुलपति, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़), डॉ. जी.डी. अग्रवाल (पूर्व सदस्य सचिव, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली), डॉ. बी.बी. सिंह (पूर्व प्राचार्य, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद), डॉ. राजपाल त्यागी, डॉ. प्रसून त्यागी, सरीखे वैज्ञानिक, शिक्षाविदों तथा अन्य विशेषज्ञों ने हिंडन प्रदूषण के भिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की। इन बैठकों में उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पदाधिकारी तथा अभियान के कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। काफी विस्तृत राय-मशविरा करने के बाद इलाज के विभिन्न चरण तय हुए:

- हिंडन किनारे के सभी उद्योगों का सर्वेक्षण किया जाए। प्रारम्भिक सर्वेक्षण में ऊपरी तौर पर दिख रहे प्रदूषण तथा समीपस्थ ग्रामवासियों की प्रतिक्रिया दर्ज की जाए। यह काम यात्रा के तुरंत बाद से जारी है।

- हिंडन में प्रदूषण डालने वाली इकाइयों के बहिस्राव पर नियमित निगाह रखी जाए। आरंभ में सीमित इकाइयों के बहिस्राव का नमूना लेकर उनकी जांच हो और उनका नियमित रिकार्ड बने।

- नमूना लेने के लिए अभियान के कार्यकर्ताओं को एक जल प्रदूषण जांच किट दी गई है। इसके लिए उन्हें प्रो. सिद्दकी द्वारा प्रशिक्षित भी किया गया है। बायो-मॉनिटरिंग के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

- नियमित रिकार्ड में जिन उद्योगों को दोषी पाया जाये, उनके खिलाफ प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को आगाह किया जाए और उचित कार्रवाई न हो तो कानूनी लड़ाई लड़ी जाए।

- नदी प्रदूषण के कानूनी पहलुओं पर रिपोर्ट तैयार करने का काम किया जा रहा है।

- चूंकि हिंडन का जलग्रहण क्षेत्र.... गन्ना क्षेत्र है और गन्ने को चीनी-शराब मिलों में बेचकर अधिक से अधिक कमाने का लालच हम लोगों के मन में है। यह लालच हमें उन चीनी-शराब इकाइयों के खिलाफ खड़ा होने में कमजोर बनाता है, जो हिंडन में सबसे ज्यादा कचरा डालती हैं। अतः हिंडन के किसानों को कम पानी में पैदा होने वाली तथा अधिक आय देने वाली औषधीय व अन्य फसलों की जानकारी दी जाये। जल संग्रहण की रचनात्मक पहल भी हो।

- हिंडन किनारे के गांवों और स्कूलों को संगठित किया जाए। हिंडन प्रदूषण से प्रभावित गांवों की एक संसद का गठन हो। प्रत्येक ग्राम पंचायत में स्थापित

की जा रही हिंडन ग्राम प्रतिनिधि इकाई का अगुवा इस संसद का सांसद बने। यह संसद हिंडन प्रदूषण मुक्ति के साथ-साथ हिंडन किनारे के गांवों में प्राकृतिक-सांस्कृतिक-सामाजिक विकास का रास्ता भी खोलेगी। इससे प्रकृति उपयोग में संयम का माहौल तैयार करने में भी मदद मिलेगी।

- हिंडन किनारे के गांवों में नदी को लेकर संगठन तैयार करने के लिए पदयात्रा, जनसंपर्क, बैठकों को नियमित तथा जवाबदेह बनाने का निर्णय लिया गया।

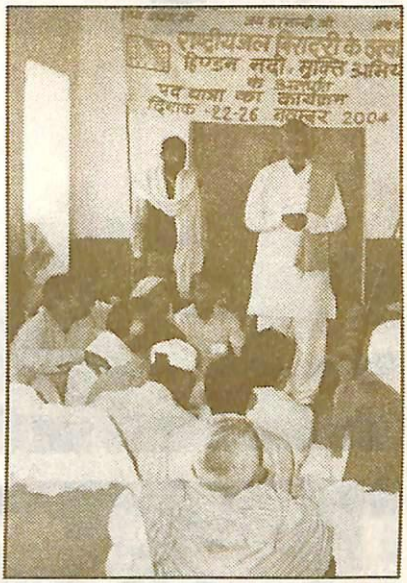

नेता-अफसर पेट के काले। बेच रहे है नदियां-नाले॥
इन्हें किया सेठों के हवाले। चलो इन्हें कुछ राह दिखाएं॥

तरुण जल विद्यापीठ
भीकमपुरा किशोरी, वाया थानागाजी,
जिला अलवर-301022 (राजस्थान) फोन : 01465-225043

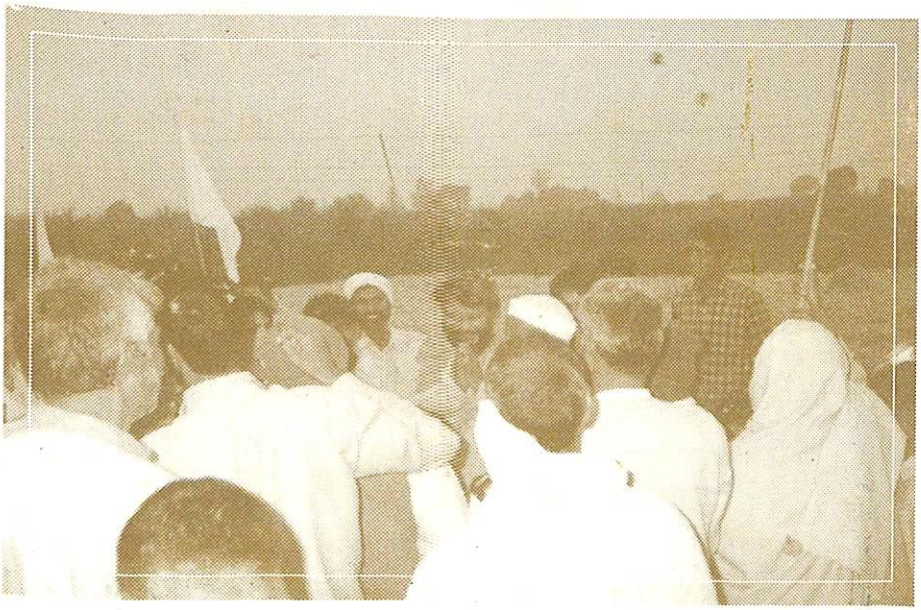

रूपांकन व मुद्रक : कुमार एण्ड कम्पनी जयपुर